॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

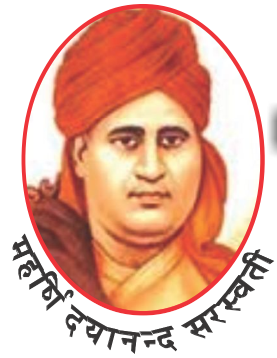

टंकारा समाचार

(श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट का मासिक पत्र)

दिसम्बर, 2013 **वर्ष** 16, **अंक** 12 | **दूरभाष (दिल्ली) :** 23360059, 23362110 | **वार्षिक शुल्क** 100 **रुपये**

विक्रमी सम्वत् 2070 | **दूरभाष (टंकारा) :** 02822-287756 | **ई-मेल : tankarasamachar@gmail.com**

एक प्रति का मूल्य 10/- रुपये | **कुल पृष्ठ 24**

युगपुरुष: स्वामी श्रद्धानन्द

❒ **महात्मा चैतन्यमुनि**

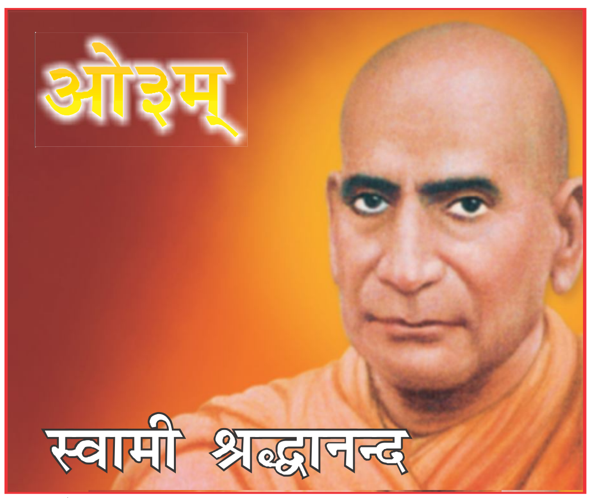

संसार में अधिकतम लोग तो अपने अमूल्य जीवन को पशुओं के समान खाने-पीने, सोने, अपने से बलवान् से डरने तथा अपने से कमजोर को डराने और सन्तान पैदा करने में ही व्यतीत कर देते हैं और फिर एक दिन मर जाते हैं। कुछ अन्य धर्म के नामलेवा मात्र तो होते हैं मगर उनके जीवन में धर्म की व्यवहारिकता नहीं होती है। जिन्होंने केवल बाहरी आडम्बर और दिखावे को ही धर्म मान रखा है। कुछ ऐसे भी होते हैं जो शास्त्रोक्त धर्म का अक्षरश: अनुपालन करके अपने जीवन को सार्थकता प्रदान करते हैं। इन सबसे उपर चाहे बहुत कम संख्या में ही सही कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो तप, त्याग एवं अद्भुत प्रतिभा से अपने जीवन को संवारकर समूचे विश्व एवं पूरी मानवता की सेवा के लिए समर्पित कर देते हैं। स्वामी श्रद्धानन्द जी एक ऐसे ही दिव्य महापुरुष थे जिन्होंने अपने जीवन को अत्यन्त पतनावस्था से उपर उठाकर आत्मन: देश, धर्म और मानव-मात्र की सेवा के लिए समर्पित कर दिया। उनके गुरु महर्षि दयानन्द जी ने आर्यसमाज जैसी सार्वभौमिक एवं दिव्य संस्था के जो दस नियम बनाए, स्वामी जी उन नियमों को अक्षरश: जीवन में कार्यान्वित करने वाले महानात्मा थे। उन्होंने जीवन की पगडण्डियों में भटकाव के भंवर भी देखे थे मगर जब महर्षि दयानन्द जी रूपी पारसमणि से उनका सम्पर्क हुआ तो वे सर्वात्मना कुन्दन बन गए और जीवन की उन उंचाईयों को छूआ जिसकी कोई कल्पना भी नहीं कर सकता था। महर्षि जी के सम्पर्क में आकर वे न केवल आस्तिक बने बल्कि उनके समूचे जीवन का कायाकल्प ही हो गया।

स्वामी श्रद्धानन्द जी स्वयं में एक इतिहास थे। उनके जीवन का कार्यक्षेत्र इतना विशाल एवं बहुआयामी था कि उनके सामर्थ्य पर आश्चर्य होता है। वे अत्यधिक आत्मविश्वासी, निर्भीक एवं उत्साही ही नहीं थे बल्कि सच्चे ईश्वर-भक्त, देश-भक्त एवं समाज-सेवक भी थे। उनका दृष्टिकोण मानवतावादी एवं सार्वभौमिक था मगर जहां देशहित की बात आती थी तो देश की अस्मिता उनके लिए सर्वोपरि हो जाती थी। वे संकुचित जातिवाद, मत-मजहबवाद, क्षेत्रवाद, आदि भावनाओं से एकदम मुक्त थे। यही कारण है कि वे मानव-मात्र के हितैषी बनकर सर्वपूज्य बने। वे प्रथम व्यक्ति थे जिन्होंने दिल्ली की प्रसिद्ध जामा-मस्जिद से वेद मन्त्र के माध्यम से भाई-चारे का सन्देश दिया था। गुरु का बाग आन्दोलन में उनकी प्रमुख भूमिका रही है। जलियांवाला बाग के हत्याकाण्ड के बाद जब समूचा देश सहमा हुआ था तो ये ही थे जिन्होंने कांग्रेस अधिवेशन का स्वागताध्यक्ष-पद स्वीकार करने का साहस किया था। गोरे सैनिकों की संगीनों के समक्ष छाती तानकर खड़ा होने वाला यह साहसी वीर अकल्पनीय है। गौरक्षा, हिन्दी प्रचलन और शुद्धि आन्दोलन की कड़ी बनना उनके जीवन का एक अत्यधिक महत्वपूर्ण अंग था क्योंकि यही हमारी राष्ट्रीय एकता और अस्मिता का आधार-भूत सूत्र था और है। शिक्षा के क्षेत्र में उन्होंने जो कार्य किया वह अपने आप में बहुत ही सार्थक एवं अनुपम है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने जिस शिक्षा-पद्धति का प्रचलन अनिवार्य माना था, स्वामी जी ने उसे व्यवहारिक रूप देने के लिए अत्यधिक तप और त्याग किया है।

आज हमारे संगठन की क्या स्थिति है यह बात सर्वविदित ही है मगर एक वह भी समय था जो आर्यसमाज का स्वर्ण-युग कहलाता है। कोई भी युग अपने-आप में अच्छा या बुरा नहीं होता बल्कि उस युग के व्यक्ति ही उस युग को स्वर्णिम बनाते हैं। वह स्वर्ण-युग था क्योंकि उस समय हमारे पास लाला लाजपतराय जैसे निर्भीक एवं ओजस्वी

(शेष पृष्ठ 20 पर)

'टंकारा समाचार' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

आर्य समाज हमारी 'माँ' हैं

डी.ए.वी. विश्व की शिक्षा सम्बन्धी चुनौतियों के लिए सक्षम

वैदिक मन्त्रोंच्चारण से प्रारम्भ हुए इस कार्यक्रम में आर्य प्रादेशिक पतिनिधि सभा एवम् डी.ए.वी. प्रबन्धकर्त्री समिति के प्रधान श्री पूनम सूरी जी ने उपस्थित सभी प्रधानाचार्यों को कहा कि हमेशा स्मरण रहे कि आर्य समाज हमारी **'माँ'** है। **'माँ'** का स्थान हमेशा प्रथम होता है। उसके संस्कारों पर ही सम्पूर्ण परिवार की नींव रखी होती है। डी.ए.वी. शिक्षण संस्थाए भी आर्य समाज रूपी **'माँ'** की ही देन है। हमें सदैव आर्य संस्कारों का प्रचार प्रसार अपने प्रत्येक माध्यम से करना है। हमें इस बात का गर्व है कि केवल डी.ए.वी. शिक्षण संस्थाओं के पास ही आर्य समाज रूपी **'माँ'** उपलब्ध है। हर कार्य इससे प्रेरणा लेकर करें।

श्री पूनम सूरी जी ने अपने वक्तव्य में डी.ए.वी. की 127 वर्षीय यात्रा की उपलिब्धयों को बताते हुए आर्य समाज की प्रमुखता पर बल दिया। और प्रधानाचार्यों एवम् शिक्षकों से अनुरोध किया कि अपने जीवन को आर्यमय बनाओ, स्वयं प्रेरणास्त्रोत बनो, बच्चे स्वयं आकर्षित होंग और आपका अनुकरण करेंगे। जीवन में **स्वाध्याय, सेवा, संध्या** करते रहो।

''डी.ए.वी. संस्थान शिक्षा की विश्वस्तरीय चुनौतियों का सामना करने में सक्षम हैं क्योंकि उनका दृष्टिकोण परिवेश की वास्तविकताओं से विकसित होता है। हम अध्ययन-अध्यापन के अपने औजारों पर नई धार लगाने के लिए नियमित रूप से प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करते हैं। शिक्षण-प्रशिक्षण की नई तकनीकों को अपनाने के लिए हम शिक्षक-शिक्षिकाओं को निरंतर प्रेरित करते हैं। इन सबके साथ-साथ हम अपने विद्यार्थियों में देश और समाज के प्रति लगाव की भावना का विकास करते हैं।'' ये विचार डी.ए.वी. कॉलेज मैनेजिंग कमेटी के प्रधान श्री पूनम सूरी ने डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल श्रेष्ठ विहार, दिल्ली के नव विकसित 'महात्मा आनंद स्वामी सभागार' के लोकार्पण के

(शेष पृष्ठ 23 पर)

अ+सफल में ही सफल निहित है।

इस सृष्टि का कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं होगा जिसने अपने जीवन में असफलता का सामना न किया हो। कभी निराशा के अंधेरे कुएें में न डूबा हो। यदि कोई व्यक्ति अभी तक असफल या निराश न हुआ हो तो यह उस व्यक्ति का परम सौभाग्य है लेकिन भविष्य किसने देखा है। जीवन में परिस्थितियाँ एक जैसी कभी नहीं रहतीं। असफलता कभी भी आपके जीवन का दरवाजा खटखटा सकती है।

प्रत्येक व्यक्ति अलग-अलग परिस्थितियों में जन्म लेता है, और लगभग अलग ही परिस्थितियों में पलता बढ़ता है, और अलग ही परिस्थितियों में काम करता है। प्रत्येक व्यक्ति की परिस्थिति भी दूसरे से भिन्न होती है। परिस्थितियाँ ही मनुष्य के समुचे व्यक्तित्व को प्रभावित करती हैं। हमारी ऐसी आस्था है कि विपरीत परिस्थितियाँ व्यक्ति को अपने कर्मो का दण्ड है और अनुकूल परिस्थितियाँ उसके सूकर्मों का पुरस्कार है। इन्हें अच्छी या बुरी परिस्थितियों के नाम से भी सम्बोधित किया जा सकता है। यह दर्शन यहाँ तक तो ठीक है परन्तु जब यह माना और समझा जाने लगता है कि उपरोक्त दण्डों को सहने के अतिरिक्त और कोई चारा नहीं है और उन्हें परमपिता परमात्मा का न्याय सहन करना ही पड़ेगा, ऐसी परिस्थितियों में विकास सम्भव नहीं है। दु:ख में जैसे भी हो धैर्य से दिन बिताने के अतिरिक्त और कोई मार्ग नहीं है। यह सोच व्यक्ति को निराशावादी भंवर में ले जाती है। इसी परिस्थिति को किसी कवि ने अपने शब्दों में इस प्रकार व्यक्त किया है:-

ए- दिल तुझे कसम है, हिम्मत न हारना।
दिन जिन्दगी के जैसे गुजरें, गुजारना।

कवि ने शब्दों को सुन्दर रूप से जोडा है लेकिन यह कामना मनुष्य को परिस्थितियों का दास बना देती है और यहीं से अति दु:खद अध्याय का प्रारम्भ होता है।

जीवन का आध्यात्मिक दृष्टिकोण जहाँ दु:खों को सहने और असफलताओं को धैर्य पूर्ण वहन का आदेश देता है, वहीं मनुष्य को विपरीत परिस्थितियों से भी संघर्ष करने की प्रेरणा देता है। दुर्भाग्य को दुष्कर्मों का दण्ड मानकर दु:खों के बोझ तो हल्का किया जा सकता है। किसी दार्शनिक ने ऐसी परिस्थिति में धैर्य रखने में कठिनाई अनुभव हो रही हो तो सुझाव दिया है कि किसी स्थानीय अस्पताल में जाकर रोगियों से मिले, उनके दु:खों को सुने, स्वत: ही अपने दु:ख कम लगने लगेंगे, और धैर्य रखने की शक्ति प्राप्त होगी। परन्तु इसका यह अभिप्राय: नहीं कि असफलताओं की मार से निष्क्रिय होकर बैठा जाये। असफलता प्रकृति का अभिन्न और अनिवार्य अंग है। इस से मनुष्य की अन्तर्निहित क्षमता, प्रयुक्त प्रतिभा और निहित योग्यता को उभर कर प्रकट करने का अवसर मिलता है। व्यक्ति का मन और बुद्धि शक्ति और सामर्थ्य के वास्तविक स्रोत होते हैं। मन भावुक भावों का और बुद्धि विचारों का आश्रय स्थल होता है। अगर दु:ख और कठिनाइयाँ आती हैं तो स्वत: ही मानसिक क्रियाशीलता अपना कार्य प्रारम्भ करते हुए उभरती और प्रतिभा के विकास में सहायक बन जाती है। विचार मन के धर्म होते हैं।

मन से उपजे विचारों को स्वतन्त्रता देनी होगी, स्वतन्त्र विचारों से कामनायें उभरती हैं। कामनाओं को स्वतन्त्र मार्ग दीजिए, वह कार्य से परिणत हो जायेगी। कार्यो को स्वतन्त्रता दीजिए वह आदतें बन जायेंगी। आदतें कुछ समय उपरान्त चरित्र के रूप में प्रकट होंगी। यही चरित्र व्यक्ति का निर्माण करता है। इस उपरोक्त पूरी श्रंखला में आप स्वयं केन्द्रीय भूमिका में रहेंगे। क्योंकि उपरोक्त श्रंखला स्वत: नहीं होती। यह प्रक्रिया सीढी का प्रथम सोपान है जिस पर आपको स्वयं ही चढ़ना होता है। यह विद्युत चालित सीढी नहीं है जो आपको स्वयं ही चढ़ा ले जाती है। आपको अपनी योग्यता और क्षमता से विकास स्वयं करना होगा। क्षमतायें बाहर से नहीं बटोरनी पडती, उन्हें अपने भीतर ही उभारना पडता है। उभारने पर यह स्वयं प्रतीत होता है कि वह पहले से ही वहाँ स्थित थी। आपने तो सिर्फ उन पर से आवरण ही हटाया है जो भारी भरकम मार्ग के रोडें आपकी सोच और आपके बीच अवरूद्ध बन कर खडे हैं, उन आलस्य रूपी प्रमाद रोडों को जैसे ही हटा दिया जाता है। अन्दर की शक्तियाँ पूरे वेग से बाहर निकल कर सम्पूर्ण जीवन का काया कल्प कर देती हैं।

इसलिए दु:खद से दु:खद परिस्थितियों में भी संघर्ष करना न छोडें और दु:ख को अपने भाग्य का लेखा न मानते हुए विपरित परिस्थितियों में भी अपने अन्दर की शक्तियों को पहचानते हुए अनुकूल परिस्थितियों की ओर अग्रसर हों।

'नई दुनिया बसाने को, नये अवसर नहीं आते
यही मिट्टी उभरती, यही जररें स्वरते है।'

-अजय टंकारावाला

सफलता

❑ सफलता प्राप्त करना चाहते हो तो अपनी शक्तियों को पहचानो। जीवन में अनेक विघ्न-बाधाएं आती हैं, इनसे संघर्ष करने के लिए आत्मविश्वासी होना चाहिए। -अथर्ववेद 19/13/5

❑ सफलता कोई रहस्य नहीं है। वह केवल अति परिश्रम चाहती है।

❑ सफलता का रहस्य विवेक, श्रम, चरित्रबल और व्यावहारिकता-इन चार साधनों में निहित होता है।

❑ सफलता का रहस्य वेदान्त को व्यवहार में लाना है। व्यावहारिक वेदान्त ही सफलता की कुंजी है।

❑ उस व्यक्ति के लिए कुछ भी असंभव नहीं है, जो संकल्प कर सकता है और फिर उस पर आचरण कर सकता है, सफलता का यही नियम है।

असफलता

❑ असफलता केवल यह सिद्ध करती है कि सफलता का प्रयत्न पूरे मन से नहीं हुआ।

❑ हमारी सबसे बड़ी शान कभी न गिरने में नहीं है, अपितु जब हम गिरें, हर बार उठने में है।

❑ असफलता निराशा का सूत्र कभी नहीं है, अपितु वह तो नई प्रेरणा है।

❑ जो लोग सचमुच बुद्धिमान हैं, वे असफलताओं से कभी नहीं घबराते।

❑ असफलताएं कभी-कभी सफलता का आधार होती हैं। यदि हम अनेक बार भी असफल होते हैं, तो कोई बात नहीं। प्रयत्न करके असफल हो जाने की अपेक्षा प्रयत्न न करना अधिक अपमानजनक है।

पवित्र भावना-इदं न मम

❑ योगेन्द्र शास्त्री 'निर्मोही''

परब्रह्म परमात्मा की पवित्र वाणी वेद की याज्ञिक क्रियाओं में **'इदं न मम'** सार्वभौमिक पवित्र भावना का कई बार प्रयोग किया गया है। यह पवित्र भावना क्या है? इसका वास्तविक स्वरूप क्या है? यदि मानव इस सत्य-सनातन-शाश्वत शब्द को अपने जीवन में धारण कर ले तो वह वास्तव में मनुष्य बन जाता है क्योंकि 'इदं न मम'' का शब्दिक अर्थ है-यह मेरी नहीं है। अब प्रश्न खड़ा हो जाता है कि इस संसार में क्या मेरा है और क्या मेरा नहीं है?

हालांकि इस चराचर जगत् में विद्यमान समस्त वस्तुएँ प्राणिमात्र के लिए परमात्मा ने उसके उपयोग हेतु ही रची है। पुरातन काल में ऋषि-मुनि वस्तुओं का यथायोग्य उपभोग तो करते थे, परन्तु उनसे मोह की भावना नहीं रखते थे। इसीलिए पूर्वकालैक मानव प्रसन्न व सुखी रहता था। किन्तु आधुनिक काल का मानव वस्तुओं का उपभोग भी करता है और उसमें स्वत्व की भावना प्रधान रहती है। संसार में सुखी रहने का एकमात्र सच्चा-सरल तथा सीधा रास्ता है कि वह पुरातन ऋषि-मुनियों की भाँति सुख के साधन का उपभोग कर वस्तु का मोह त्याग दे। इस विषय में परमात्मा ने अपनी पवित्र वाणी वेद में यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय के द्वितीय मन्त्र में मानव जाति को आदेश दिया है-**'ओ३म् कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः। एवं त्वयि नान्यथेतोस्ति न कर्म लिप्यते नरे।।'** अर्थात् मनुष्य श्रेष्ठकर्म करते हुए सौ वर्ष तक जीने की इच्छा रखे। किन्तु उन कर्मों में कभी भी लिप्त न हो, उसमें ममत्व की भावना न जुड़े। जब तक मनुष्य के अन्दर ममत्व अर्थात् मोह की भावना तब तक मानव सुखी नहीं रह सकता। देखिए ममत्व की भावन होने पर मानव की ही नहीं, भारतवर्ष की भी कितनी बड़ी हानि हो चुकी है, इसका प्रत्यक्ष प्रमाण महाभारत में देखने को मिलता है।

जब पाण्डव शतरंज (जुए) में सारा राज्य हारकर जंगल चले गये। तब महाभारत युद्ध से पूर्व, जब श्रीकृष्ण शान्तिदूत बनकर दुर्योधन के पास गये और सन्धि हेतु कहा। तब दुर्योधन के हृदय में 'इदं मम' की भावना पैदा हो गई और वह श्रीकृष्ण से बोला- 'सूच्यग्रं न दास्यामि केशव! युद्धेना बिना।' दुर्योधन की यह इद मम की भावना होने से महाभारत जैसा विनाशकारी महायुद्ध हुआ जिसमें वैज्ञानिक, वैद्य, शास्त्रार्थ महारथी, वेदों के प्रकाण्ड विद्वान सब नष्ट हो गये। तथा ''इदं न मम'' की पवित्र भावना का उदाहरण देखने को मिला है रामायण में। जब राम के राज्याभिषेक की तैयारी हो रही थी, तब दशरथ की पत्नी कैकेयी ने रामवनवास और भरतराज्य की मांग की, तो राम ने तुरन्त कह दिया-''इदं न मम राज्यम्'' और तुरन्त भरत को दे दिया। जब यह खबर ननिहाल में रह रहे भरत को मालूम हुई तो उन्होंने कहा 'इदं राज्यं मम न अस्ति। और राम के पास जाकर कहा-भैया, यह राज्य मेरा नहीं है, यह आपका है, आप घर चलकर अपने राजकार्य का संचालन करो।

राम ने कहा-नहीं भरत। यह राज्य न मेरा है और न तुम्हारा है, यह प्रजा का राज्य है। भरत के ज्यादा आग्रह करने पर राम ने कहा-हे भरत! यह राज्य प्रजा का है, प्रजा का मानकर, ईश्वर की आज्ञानुसार अपनी सुमति से राज्य का कुशल संचालन करो'' और इस तरह भरत ने सत्य की आज्ञानुसार राज्य का संचालन किया। अतः कहने का अभिप्राय है कि जब हमारे हृदय में इदं न मम की भावना विद्यमान रहती है तो हम सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करते हैं तथा जब हमारे हृदय में इदं मम की भावना जागृत हो जाती है तो दुर्गति के मार्ग खुल जाते हैं। मनुष्य को सांसारिक वस्तुओं का उपभोग इदं न मम की भावना से करना चाहिए। तभी तो यज्ञ प्रार्थना में कहते हैं- ''इदं न मम की भावना प्रत्येक में व्यवहार हो।''

यदि संसार के समस्त मनुष्य ''इदं न मम' की भावना को हृदयंगम कर लें तो यह संसार फिर से स्वर्गमय हो जाएगा।

संसारी मानव सुखी होगा जब।
इदं न मम हृदयांगम करेगा तब।।

कैसे हैं वे लोग

जिनका मनुष्य योनि में जन्म हुआ
पालन पोषण हुआ लालन पालन हुआ
शिक्षा दीक्षा हुई सीख समझ मिली
मनुष्यों के बीच रहन सहन हुआ
मनुष्य की पीड़ा का पता चला
परेशानियों का अनुभव हुआ
फिर भी वक्त आने पर
मौका मिलने पर
उन्होंने हैवानों से भी गिरा हुआ
कुत्सित घृणित
नीचता की पराकाष्ठा जैसा
अपने ही जैसे इन्सानों के साथ
दुष्कर्म करने से गुरेज नहीं किया
न किसी बच्ची की मासूमियत देखी
न किशोरी की निरीहता समझी
न किसी की मजबूरी का विचार किया
न भरोसे का लिहाज किया
न कानून का डर माना न भगवान का
और शर्मिन्दा कर डाला
अपने कुकृत्य से इन्सानियत को
सिर झुका दिया हमेशा के लिए
हर संवेदनशील इन्सान का

- ओम प्रकाश बजाज,
बी-2, गगन विहार, गुप्तेश्वर, जबलपुर-482001, म.प्र.

आर्य विद्वानों से अनुरोध

आगामी बोधोत्सव 26, 27, 28 फरवरी 2014 के अवसर पर ''टंकारा समाचार'' का फरवरी 2014 अंक ऋषि बोधांक के रूप में प्रकाशित होगा। आपसे प्रार्थना है कि आप अपने सारगर्भित अप्रकाशित लेख एवं कविता 30 दिसम्बर 2013 तक भिजवाकर कृतार्थ करें। लेख वेद, स्वामी दयानन्द, योग, स्वास्थ्य आदि एवं अन्य जन उपयोगी प्रेरणादायक विषयों पर 2000 शब्दों तक ही सीमित हों, यदि प्रकाशन सामग्री टाईप की हुई हो तो सुविधाजनक रहेगा अथवा टाईप की हुई सामग्री ई-मेल द्वारा ओपन फाईल के रूप में **tankarasamachar@gmail.com** पर भी भेज सकते हैं। इसके लिए मैं आपका अत्यन्त आभारी रहूंगा।

अजय, सम्पादक टंकारा समाचार, ए-419, डिफेन्स कॉलोनी, नई दिल्ली-110024, चलभाष न. 9810035658

टंकारा-आर्यत्व का प्रतीक

❒ त.शि.क. कण्णन

अत्यन्त हृष्ट, पुष्ट, बालकपन में सरलता की प्रतिमूर्ति चंचल मूलशंकर, सब कुछ जानने, समझने को उत्सुक। पिता जी की आज्ञा से अत्यन्त श्रद्धा से, शिव के प्रति अटूट भक्ति के कारण प्रसन्न चित्त, सभी धार्मिक अनुष्ठानों को देख रहा था। रात के 12 बजे, प्रगाढ़ निद्रा में सोता हुआ श्रद्धालु भक्त समाज। विश्व विधाता 'शिव' के दिव्य स्वरूप को समझाने, समझने, जानने के लिए एकत्रित हुआ था। मूलशंकर को शक्ति सम्पन्न शिव अशक्त जान पड़ा, बस उस चूहे का नर्तन उन्हें असह्य हो गया। आतुरता तो मूलशंकर भी उस शिव की लीला को जानने के लिए लालायित था। काल के दिव्य आलोक में मूलशंकर ने अपनी दिव्य मेधा से जिस शिव का साक्षात्कार किया था, वह उनके विचार में शिव का प्रकाशमय आनन्दमय स्वरूप होना चाहिए, जो मानव की भक्ति को समृद्धकर सके, प्रशस्त परिपूर्ण कर सके।

पूजा हुई, प्रसाद मिला, शिव की उदारता पर भजन संगीत हुआ। चूहा भी शिवजी के माल को खाकर मालामाल हो गया। कितनी बड़ी नकारात्मक, निरर्थक साधना है। मूलशंकर का तन, मन, छिन्न भिन्न हो गया। यह शिव पूजा नहीं है, बिल्कुल नहीं है।

टंकारा एक छोटा सा गांव है। जीवन, जगत की सभी सुविधाओं से दूर। यहां कुछ भी न था। सूखा प्रदेश, निर्धनता में डूबा हुआ समाज। बस एक दयानन्द थे। जो कुछ कर गुजरने को तड़प रहे थे। इस उपहासास्पद शिव के नाटक को बन्द करना चाहिए।

मूलशंकर ने सारे समाज को देखा, समझा, परखा मूलशंकर मूलत: शिव के सच्चे स्वरूप को देखना चाहते थे। वे शिव के अनुष्ठान से समाज को स्वस्थ, सुन्दर, सामर्थ्यवान बनाना चाहते थे।

समय का प्रवाह तेजी से परिवर्तित। दयानन्द के नाम की आंधी इतनी जोर से चली, देखते देखते सुदूर दक्षिण को छोड़ आर्य समाज की पताका भारत के कोने-कोने में फहराने लगी। आर्यसमाज का अस्तित्व घनत्व में परिणत हो गया। तब आर्य समाज का दब दबा था।

समय के अन्तराल से महर्षि ने अपनी दिव्य मेधा से जिस शिव से साक्षात्कार किया था वह उनके विचार में शिव का प्रकाशमय, आनन्दमय स्वरूप होना चाहिए। जो मानव मन को जीवन को सत्पथ पर अग्रसर कर सके।

महर्षि चाहते थे कि प्रभु की जिस दैवी शक्ति ने विशाल द्युलोक, पृथिवी लोक, अन्तरिक्ष लोक को अपने अपने स्वरूप में स्थिर रखा है, उसको छोड़ कर कस्मै देवाय हविषा विधेम। ऋग्वेद-10/2/5 हम किस देव (शिव) की उपासना करें। महर्षि ने सोचा

''न तस्य प्रतिमा अस्ति, यस्य नाम महद् यश:''

उस प्रभु का यश स्वरूप सर्वत्र फैला हुआ है। उसकी प्रतिमा नहीं हो सकती है।

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्यवर्णं तमसः परस्तात्। यजु 31.18

परम पिता प्रभु सूर्य के समान अपने तेजोमय रूप को सर्वत्र फैलाये हुए हैं। अत: प्रभु की महिमा को जानने के लिए महर्षि ने गायत्री मन्त्र का उद्बोधन कराया। 'धियो यो न: प्रचोदयात्' हम सबकी बुद्धियों को प्रेरित करे और हमारा मन **'तन्मे मन: शिवसंकल्पमस्तु'** मेरे मन का संकल्प शुभ व कल्याणमय हो।

महर्षि ने अपने अमूल्य सन्देशों से जिस आलोक का वर्णन किया है वह निश्चित रूप से सार्वकालिक, सार्वभौम महत्व का है।

आज आर्यसमाज को टंकारा के इस देवदूत की महिमा को जानने तथा समाज के मन को दिव्यता प्रदान करने के लिए ऋषिवर के मौलिक सिद्धान्तों को ओझल नहीं होने देना चाहिए। महर्षि ने तत्कालीन समाज की मनोवृत्ति को पूर्णत: समझा था और उसे सही ढंग से अपनी कार्यप्रणाली में बदला। कितनी घनघोर तपस्या थी कितना आत्मिक बल था। यह हमारा कितना दुर्भाग्य है कि देश की बदलती हुई परिस्थिति में हम अपने को शक्ति सम्पन्न नहीं कर सके हैं। समाज को सुधारने का यह एक स्वर्णिम अवसर है। महर्षि का उद्देश्य था।

''सा नो माता भारती भूर्वि भासताम्''

हमारी विश्व प्रसिद्ध मातृभूति भारत सदा प्रकाशमान रहे। आज हमारी राष्ट्रीयता नितान्त निर्बल है। जो हमारे संस्थापक महर्षि की शुद्ध भावना में एक प्रतिरोध है। वे तो बलिष्ठ भारत के चहेता थे।

स्वतंत्रता से पूर्व आर्य समाज एक ऐसे शक्तिमान संस्था के रूप में प्रकट हुआ था जिसकी देश को तत्कालीन परिस्थिति में सबसे ज्यादा आवश्यकता थी। आज देश की स्थिति इतनी दारूण, विरूप, विवेक भ्रष्ट है कि देश के साधारण व्यक्ति से लेकर हमारे नेता इतने निष्प्राण तथा वस्तु स्थिति से विवश हैं कि वे अत्यन्त शक्ति हीन उत्तरदायित्व हीन जाल में स्वयं उलझे हुए हैं। उनकी बातों से कभी भी राष्ट्र की गरिमा उन्नत नहीं हुई है। भारतवर्ष एक बहुत बड़ा देश है इसकी एक शक्तिमत्ता पूर्ण स्थिति है।

आज की दुर्धर्ष स्थिति यह है कि आर्यसमाज अपने समृद्ध व्यक्तित्व से हटकर मात्र साप्ताहिक हवन, विवाह तथा व्यक्तिगत हवन, यज्ञ, वार्षिकोत्सव तक सीमित रह गया है। आज के जीवन की दुराग्रह स्थिति यह है कि समाज के पुरोहितों, पण्डितों को दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति का साधन हो गया है। समाज को ओजस्वी स्वरूप धुंधला पड़ गया है और उसकी गणना मात्र हिन्दू संस्थाओं की एक शाखा के रूप में होने लगी है। ऋषि का वह तेजस्वी चिन्तन कि आर्यसमाज एक प्रभुत्व सम्पन्न संस्था के रूप में उभर कर राष्ट्र को दिशा निर्देश करेगा वह धूमिल हो गया है। समस्त भारत में, विदेशों में हम विद्यमान हैं, पर वह हमारी निरबलंबता की छवि है।

विद्वत्ता से परिपूर्ण विद्वानों का आभाव है। शास्त्रार्थ से पूर्णत: परिचित विद्वान हमारे मध्य नहीं हैं। हरियाणा की मदमस्त ढोलकी की भजन मण्डली गुम हैं।

टंकारा का मूलशंकर ध्रुव तारा था जो अंधेरे में भी अपनी सत्ता से दिशा ज्ञान कराता है। परन्तु खेद और आश्चर्य की बात है कि नवयुग का विधाता और आदर्श भारतीय राष्ट्र निर्माता के रूप में उन्हें इतनी ख्याति नहीं मिली, जितनी वस्तुत: मिलनी चाहिए। महर्षि तो नैतिक तथा धार्मिक पुनरूद्धार के उत्तरदाता हैं, ऋषि ने अनेक वर्षो तक भारतवर्ष का भ्रमण करके जनता तथा राजा की दयनीय शक्ति तथा स्थिति को अपनी आंखो में देखा था। अत: महर्षि ने सत्यार्थप्रकाश के छठे समुल्लास में इस बात पर बल दिया है कि राजनियम और प्रजानियम ऐसा होना चाहिए कि प्रत्येक नागरिक को पूर्णत: शिक्षित किया जाए।

तभी प्रजातन्त्र के सभी लाभों को प्राप्त कर सकेगें। महर्षि का कथन था कि दूसरों पर अवलम्बित न रहो। स्वयं अपने आपको प्रस्तुत करो, पथप्रदर्शक बनो **''आत्म दीपो भव''।** एक दीपक की भांति पथ का संचार तो करो। मानव ही स्वयं ज्योति है और उसमें इतनी कार्य क्षमता है कि समाज को जागरूक कर सके।

महर्षि ने सदा ही भारतवासियों को जगाने का भरपूर प्रयत्न किया है। अरे आगे तो बढ़ो शक्ति संचयन करो। शक्ति के अभाव की चिन्ता मत करो। समस्त विश्व को प्रचण्ड ज्योति वितरित करते हुए क्या कभी सूर्य ने आलोक का अनुभव किया है। जैसे जैसे वह आकाश को अपने विस्तृत ज्योति पुंज से दिव्यता प्रदान करते हुए आगे बढ़ता है त्यों-त्यों उसकी शक्ति, सामर्थ्य, आभा भण्डार पूर्णता से भरा रहता है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती तो आधुनिक चाणक्य थे। क्या कुछ उन्होंने हमें नहीं सिखाया। भारतीयों को कितना सचेत किया।

'वयं हि शक्ता धर्मस्य रक्षणे धर्मचारिणः'

धर्म के मार्ग पर चलने वाले हम अपने धर्म की रक्षा करने में समर्थ हैं। महर्षि जीवन को शिव के प्रति अर्पित करने को लालायित थे। वह शिव, जो भारतीय ऋषि का अभीष्ट है। **'तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु'** व्यक्ति का मन शिव संकल्पों से बने। शिवता का संकल्प ही उनका पथप्रदर्शक है। हमारे ऋषियों ने इस सत्य को पुनः पुनः संकेत दिया है। **उदार चरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।** पर हमारे प्रयास में कभी-कभी विवशतायें होती हैं। एषणायें, प्रेरणायें संकल्प में स्वार्थ आ जाता है। समाज दुर्बल होता है। महर्षि की उस शिवत्व के प्रति आसक्ति थी। जिसमें 'स्व' सत्ता का पूर्ण विसर्जन हो। जब हमारी समस्त चेतना, समस्त ऊर्जा, इन्द्रियाँ, मन, बुद्धि सर्वकल्याणमय हो जाय। तब वह शिवत्व प्राप्त करता है। ऋषि की यही आकांक्षा थी। मानवता को अपने शिवत्व गुण से प्रकाशित करे, शक्ति दे। मर्यादा पुरुषोत्तम का जीवन भी शिवत्व में रूपायित है। महर्षि ऐसे शिवत्व के पक्षधर थे। जो राष्ट्र को बौद्धिक ऊर्जा प्रदान करे। भारतीय संस्कृति में जिसकी परिपूर्ण आशा, आस्था, आग्नेय स्वरूप हो।

महर्षि ने प्रभु प्राप्त वाणी का प्रसार का दिव्य बाण की तरह प्रयोग किया। महर्षि के उदात्त वचनों के आधार पर भारत अनुसरण करता तो यह देश विकास की इस दौड़ में विश्व का पुनः गुरु होता। प्रभु ने गायत्री का दिव्य मन्त्र दिया। पर हमने मन्त्र पढ़ कर उसका अनुसरण नहीं किया। हमने अपने चरित्र का उपहास किया। अनैतिकताओं भ्रष्ट आचरण से चरित्र को तार कर दिया है। उसका परिणाम प्रकृति प्रदत्त वह प्रकाश हमें कही भी दीप्ति और पवित्र से प्रकाशित नहीं होता है।

श्रुति की दिव्यता को महर्षि से क्या हमें अपनी दिव्य लक्ष्मी विरासत को शुद्ध सुरक्षित रखने के लिए प्रेरित किया। अंग्रेजो के शासन ने हमारी श्रद्धा और आस्था को जड़ से उखाड़ फेंका है और आज मस्तिष्क हृदय दोनों मरुभूमि की तरह हो गए हैं।

वैदिक संस्कृति ने हमें सचेत किया है समस्त विश्व पूर्णरूपेण ईशत्वमय हो, महर्षि हर स्तर पर मानव को संस्करवान बनाना चाहते हैं। ऋषि की पुनः पुनः प्रार्थना होती कि तुम ईश्वर के प्रति गहरी आस्था में शक्तिमान बनो। **'महर्षि की मान्यता है कि अथातक्रत्वर्थ पुरुषार्थयोर्जिज्ञासा'।** प्रत्येक व्यक्ति को कर्म से पूरित पुरुषार्थ को अपनाना चाहिए। महर्षि ने जब समाज की स्थिति को देखा तो चकित रह गएं शिव की इतनी गहरी पूजा। पर कहीं भी शिव के दर्शन नहीं हुए। जीवन का परम सत्य हमें प्राप्त है। पर अज्ञान वश हम उसके ब्रह्म स्वरूप से वंचित हैं। हमारे समाज में व्यक्ति अहंकार, काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि दुर्गुणों से ग्रस्त है। समाज में पुरुषार्थ हीनता है। हमारा अभिशाप ही हमें अपने को न जानना है। कितनी हीनता में हम मज्जित हैं। दुर्बलता ग्रस्त हैं।

महर्षि अत्यन्त स्पष्टवादी हैं। महर्षि एक बहुमुखी प्रतिभा के सघन व्यक्तित्व से परिपूर्ण हैं। उनका परम उद्देश्य था कि भारतीय जन जीवन में भारतीय संस्कृति, वेदों का यथार्थ ज्ञान पहुंचाया जाये महर्षि, लेखक, वेदों के व्याख्याता, सामाजिक सुधारक, संस्कृत के प्रचण्ड मूर्धन्य विद्वान हैं। वे एक जागरूक और व्यवहार कुशल व्यक्ति हैं। उनके जीवन का एक आदर्श था, एक उद्देश्य था और उन्होंने अपने जीवन में सदा सत्य को अपनाया।

तर्क पूर्ण विवेक महर्षि के व्यक्तित्व की विशिष्टता है। यथा तथ्य का सत्य निरुपण। महर्षि ऊर्ध्वतम स्थिति में कैसे पहुंचे। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सर्वदा तटस्थ भाव को अपनायां जीवन में कभी भी अपने बारे में नहीं सोचा। अपने प्रति इच्छा, आशा सभी का त्याग पता नहीं दयानन्द कहाँ पहुँच गए। मोहरहित परस्पर भातृभाव प्रभु सभी का अधिपति है। सर्वज्ञ, अन्तर्यामी है।

आर्य बन्धुओं को आज सेवाव्रती होना चाहिए। राष्ट्र को आज आर्यत्व की आवश्यकता है और ऐसा आर्यत्व, जिसमें महर्षि जैसा विद्वान, सेवाव्रति, त्याग, बलिदान, क्षमा से सन्तुष्ट हो।

महर्षि के प्रत्येक शब्द में गम्भीर-चिन्तन, आस्था का बल, सात्विक सौन्दर्य का अनुपम प्रकाश तथा उच्चतम प्रांजल प्रेरणाओं का मनोमय ऐश्वर्य बिखरा पड़ा है। उनकी उपयोगिता आज की आवश्यकता है। आज आर्यसमाज को समाज के मन में दिव्यता से भरा आचरण करना होगा। महर्षि दयानन्द के मौलिक सिद्धान्तों को ओझल नहीं होने देना चाहिए। महर्षि मानवता के पथ प्रदर्शक रत्न हैं। महर्षि की स्वाभिमान से पुष्ट इच्छा थी समाज का अम्युदय। 'सं वो मनांसि जानताम्' तुम सबके मन उत्तम आचरणों से युक्त हों। स्वयं महर्षि ने उस समय की परिस्थिति का पूर्ण परिचय प्राप्त कर समाज की मनोवृत्ति को समझा। विश्व के सम्पूर्ण इतिहास में महर्षि जगतितल की श्रेष्ठ विभूति हैं, प्रकृति के उत्कृष्ठ प्रसून हैं 'महती देवता हयेषा नर रूपेण तिष्ठति' समाज के लिए समर्पित मनुष्य वास्तव में देवता हैं। महाभारत का अमृत वचन है।

'न हि मानुषात् श्रेष्ठतरं हि किंचित्' मनुष्य से बढ़कर कुछ भी श्रेष्ठ नहीं है। सभी ईश्वर के अंश हैं **'समोऽहं सर्वभूतेषु'** महर्षि दृढ़ता से कहते हैं **'एतत् ज्ञानं हि सर्वस्य मूलं धर्मस्य शाश्वतम्'** शाश्वत ज्ञान ही सारे धर्म का मूल है। ईश्वर असीम शक्ति का बृहद भण्डार है। प्रभु ही हमारे लिए एक अनन्त अक्षय शक्ति के स्रोत हैं।

आर्यसमाज को पुनः ऊर्ध्वतम स्थिति को प्राप्त करने का एक ही उपाय है। वैदिक वाङ्मय का सर्वत्र प्रचार' किसी भी संस्था के चार पाये होते हैं। सहयोग, बन्धुत्व, समानता, त्याग। **'समं सर्वेषु भूतेषु'** सभी व्यक्तियों में समभाव। हमने सब कुछ पाकर भी अपनी शक्ति को खो दिया है। सबके कल्याण में अपना कल्याण, सबके हित में अपना हित। आर्यसमाज को अभ्युदय के लिए परस्पर सहयोग, समानता, त्याग अत्यन्त आवश्यक तत्व हैं। हे सत्पुरुषों इन्हें अपनाते हुए आर्यसमाज को बलिष्ठ करो।

(शेष पृष्ठ 20 पर)

स्वामी श्रद्धानन्द

❐ नरेन्द्र आहूजा विवेक

स्वामी श्रद्धानन्द विलक्षण एवं बहुआयामी प्रतिभा सम्पन्न थे। उनके जीवन के विविध आयाम, विभिन्न क्षेत्रों में उनके द्वारा किए गए कार्य इतने अधिक हैं कि उनका वर्णन एक लेख में कर पाना संभव नहीं है। फिर भी उनके लिए किए गए कार्यो की संक्षिप्त चर्चा करने का प्रयास करते हैं–

1. महर्षि दयानन्द के मानस पुत्र– बालक मुंशीराम स्वामी श्रद्धानन्द का बचपन का नाम था। बालपन से ही पिता के पुलिस अधिकारी होने, पिता के पुलिस कोतवाल पद की शक्ति एवं संपदा तथा बचपन से ही पाश्चात्य संस्कृति का प्रचार करने वाले विद्यालयों में पढ़ने के कारण नास्तिक एवं विलासी हो गए थे। मुंशीराम को परमात्मा की सत्ता पर विश्वास नहीं था। वर्ष 1879 में जब महर्षि दयानन्द वैदिक धर्म का प्रचार करते हुए बरेली पहुंचे तो मुंशीराम के पिता नानकचंद वहां कोतवाल नियुक्त थे। मुंशीराम वहीं पहली बार देव दयानन्द के संपर्क में आए फिर तो जैसे लोहे को पारसमणि ने छू लिया। महर्षि दयानन्द ने ईश्वर के निज नाम 'ओ३म्' की चर्चा की जिसका मुंशीराम के मन–मस्तिष्क पर इतना प्रभाव पड़ा कि उनका पूरा जीवन परिवर्तित हो गया और यहीं से बालक मुंशीराम को महात्मा मुंशीराम और फिर संन्यास ग्रहण करने के उपरांत स्वामी श्रद्धानन्द बनने का लंबा सफर शुरु हुआ और जीवन पर्यन्त वैदिक मान्यताओं का प्रचार प्रसार करते पाखंडों कुरीतियों का उन्मूलन करते रहे। देव दयानन्द के अपने जीवन पर प्रभाव को स्वामी श्रद्धानन्द ने अनेक स्थानों पर विशेष रूप से कल्याण मार्ग का पथिक में स्वीकार किया है।

2. गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली के संस्थापकः– स्वामी श्रद्धानन्द देश के भविष्य का निर्माण करने वाली युवा विद्यार्थी वर्ग के लिए गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली के पक्षधर थे। स्वतंत्रता संग्राम के अनेकों सच्चे सेनानी स्वामी श्रद्धानन्द के इन्हीं गुरुकुलों की क्रान्तिकारी शिक्षा की उपज थे। अपने गुरुकुलों के ब्रह्मचारियों को वह वैचारिक बम्ब की संज्ञा देते थे। स्वामी श्रद्धानन्द ने मुलतान, कुरुक्षेत्र, इन्द्रप्रस्थ, माटिन्डू, रोहतक, रायकोट, लुधियाना, सूपा गुजरात में गुरुकुलों की स्थापना की। यह गुरुकुल कितने ही आजादी के मतवाले क्रान्तिकारियों शहीदों की शरण स्थली बनें। स्वामी जी ने बिना सरकारी सहायता के इन गुरुकुलों की स्थापना एवं संचालन किया।

3. नारी शिक्षा के पक्षधरः स्वामी श्रद्धानन्द ने वर्ष 1923 में दरियागंज में एक कोठी लेकर कन्या गुरुकुल की स्थापना की जो बाद में देहरादून में स्थानान्तरित हो गया। इस समय भारतीय समाज में लड़कियों को पढ़ने–पढ़ाने का अधिकार नहीं था परन्तु नारी शिक्षा के पक्षधर स्वामी जी ने तमाम विरोध सहते हुए थी नारी शिक्षा की वकालत की।

4. निर्भीक निष्पक्ष पत्रकारः स्वामी श्रद्धानन्द ने पत्रकारिता के क्षेत्र में निर्भीकता, निष्पक्षता के मापदंड स्थापित करते हुए सद्धर्म प्रचारक, श्रद्धा एवं दि लिबरेटर का प्रकाशन किया। अर्जुन व दैनिक तेज में प्रकाशित स्वामी जी के लिखे लेखों में उस व्याप्त कुरीतियों पाखंडों पर करारी चोट करते हुए वैदिक मान्यताओं का प्रचार–प्रसार किया। पत्रकारिता के माध्यम से स्वामी जी ने उस युग का ही इतिहास नहीं लिखा बल्कि नवयुग के निर्माण की रूपरेखा प्रस्तुत की।

5. निर्भीक संन्यासी– वर्ष 1919 में अंग्रेजी हुकूमत के काले कानून 'रोलेट एक्ट' के विरोध में दिल्ली में विशाल जुलूस प्रदर्शन का नेतृत्व कर स्वामी श्रद्धानन्द ने उस पुलिस बंदूकों के आगे छाती तान दी और गर्जना की चलाओ गोली। स्वामी जी के व्यक्तित्व का प्रभाव था कि निहत्थे प्रदर्शनकारियों पर गोली चलाने के लिए उठी बंदूकें झुक गई। जलियांवाला बाग कांड के उपरांत जब बड़े–बड़े नेताओं की हिम्मत जवाब दे गई उस इतिहास रचते हुए स्वामी जी ने अमृतसर के कांग्रेस अधिवेशन का संयोजन किया और उसके स्वागताध्यक्ष बनाए गए। गुरुकुल के ब्रह्मचारियों को राष्ट्रवाद का पाठ पढ़ाकर स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण योगदान देकर निर्भीकता का परिचय दिया।

6. साम्प्रदायिक सौहार्द के प्रतीकः स्वामी जी का जीवन संपूर्ण मानव जाति के लिए था। वह सभी धर्म एवं मतावलम्बियों के प्रति उदार दृष्टिकोण रखते थे। स्वामी श्रद्धानन्द एक मात्र ऐसे सन्यासी थे जिन्होंने दिल्ली की जामा मस्जिद की प्राचीर से वेदमन्त्र बोलते हुए भाषण दिया। अमृतसर में कांग्रेस अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष के रूप में वेदमन्त्रों के उच्चारण के साथ हिन्दी में भाषण दिया। स्वामी जी ने गुरुकुलों में सभी धर्मो मतों के लोगों का बड़ी उदारता से स्वागत किया।

7. सामाजिक समरसता के प्रतीकः स्वामी जी जन्म से जाति के कट्टर विरोधी थे देव दयानन्द के मानस पुत्र की मान्यता थी कि व्यक्ति अपने आचरण, व्यवहार से जाना जाता है। उन्होंने बिरादरी का उग्र विरोध सहते हुए भी बेटी अमृत कला का अन्तर्जातीय विवाह डॉ. सुखदेव के साथ किया। पुत्रों हरीशचंद्र एवं इंद्र के भी अन्तर्जातीय विवाह किए। इस प्रकार स्वामी जी जीवन भर जात–पात, छुआछुत आदि बंधनों को तोड़कर सामाजिक समरसता के प्रतीक बने।

8. दलितोद्धारकः स्वामी श्रद्धानन्द अस्पृश्यता एवं छुआछूत को हिन्दू समाज के माथे का कलंक मानते थे। अछूतों के लिए दलित शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग स्वामी जी ने ही किया था। वर्ष 1913 में स्वामी जी ने दलितोद्धारक सभा की स्थापना की तथा बाद में इसके अध्यक्ष भी बने। अहमदाबाद में कांग्रेस अधिवेशन के समय छुआछूत के विरोध में प्रस्ताव रखा।

9. शुद्धि आंदोलन के प्रणेताः स्वामी श्रद्धानन्द एवं पंडित लेखराम शुद्धि के कार्य को सर्वोच्च प्राथमिकता देते थे। स्वामी जी ने लाहौर एवं जालंधर आर्यसमाजों में सैकड़ों रहतियों, मेवों, आडों, डूमणों, मलकाने, राजपूतों व मेद्यों की शुद्धि का कार्य किया। वर्ष 1923 में हिन्दू शुद्धि सभा की स्थापना की तथा शुद्धि समाचार मासिक पत्र भी निकाला।

10. महान स्वतंत्रता सेनानीः गुरुकुलों में क्रान्तिकारियों को समय समय पर शरण एवं सहायता प्रदान की तथा वैचारिक बल भी दिया। स्वामी जी गुरुकुलों के विद्यार्थियों को राष्ट्रवाद देशभक्ति का पाठ पढ़ाते हुए देश की आजादी के संघर्ष की प्रेरणा देते थे। अमृतसर कांग्रेस अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष बने व कितने ही प्रदर्शनों का नेतृत्व किया। स्वामी जी ने आजादी की लड़ाई में वैदिक सिद्धांतों की वैचारिक क्रांति का बिगुल बजाया।

11. हिन्दी साहित्य सेवा: स्वामी श्रद्धानन्द हिंदी को राष्ट्र भाषा तथा पूरे देश को एक सूत्र में बांधने वाली भाषा मानते थे। स्वामी जी ने पहले उर्दू में प्रकाशित होने वाली सद्धर्म प्रचारक को हिंदी में निकाला और उर्दू भाषी क्षेत्र के गढ़ में स्थापित किया। हिन्दी साप्ताहिक श्रद्धा भी आपने स्थापित की। 'आर्य सिद्धांत व्याख्यानमाला' के अन्तर्गत बारह पुस्तकें, आत्मरचित 'कल्याण मार्ग का पथिक' तथा 'न्याय विज्ञान' विषय पर हिंदी में साहित्य सृजन किया। स्वामी जी ने हिंदी में आर्ष साहित्य की चौबीस से अधिक पुस्तकें लिखी। स्वामी जी अपने अधिकांश भाषण प्रवचन हिंदी में ही दिया करते थे।

12. महान दानवीर: स्वामी श्रद्धानन्द ने जहां अपना पूरा जीवन वैदिक मान्यताओं एवं आर्य सिद्धांतों के लिए आहूत कर दिया वहीं अपनी सारी धन संपत्ति गुरुकुलों एवं आर्य समाज के लिए दान दे दी। स्वामी श्रद्धानन्द प्रत्येक कार्य में दान एकत्रित करने से पूर्व अपनी आहूति भी प्रदान किया करते थे।

13. आत्म बलिदान: वैदिक मान्यताओं, आर्य सिद्धांतों के प्रचार-प्रसार एवं शुद्धि आंदोलन का कार्य करते हुए अपना जीवन बलिदान कर दिया। असगरी बेगम की शुद्धि कर उसे 'शांति देवी' बनाया। एक मतांध अब्दुल रशीद ने 23 दिसम्बर 1926 को गोलियां मारकर स्वामी श्रद्धानन्द की हत्या कर दी। शुद्धि के लिए आत्मबलिदान करते हुए स्वामी श्रद्धानन्द वीरगति को प्राप्त हो गए। स्वामी जी का जीवन हम सभी के लिए पथ प्रदर्शक व अनुकरणीय है। उनके जीवन से प्रेरणा लेकर यदि हर व्यक्ति वैदिक मान्यताओं का अनुसरण करें तो निश्चित रूप से समाज सभी समस्याओं से छुटकारा पा सकता है।

– 502 जी एच 27, सैक्टर 20, पंचकूला, हरियाणा

गौ-दान : महा-दान

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा द्वारा संचालित अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय में ब्रह्मचारियों की दिन- प्रतिदिन बढ़ती संख्या के कारण टंकारा स्थित 'गौशाला' से प्राप्त दूध ब्रह्मचारियों हेतु पर्याप्त नहीं हो पा रहा है। इस कारण ट्रस्ट ने यह निश्चय लिया कि तुरन्त नयी गायों को खरीद लिया जाये ताकि ब्रह्मचारियों को पर्याप्त मात्रा में दूध उपलब्ध कराया जा सके।

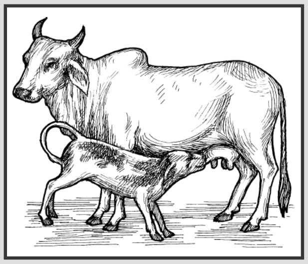

टंकारा स्थित गौशाला हेतु भारत के असंख्य आर्य परिवारों एवं आर्य संस्थाओं की ओर से 15000/- रुपये प्रति गाय हेतु दानराशि प्राप्त हो रही है। गुरुकुल में ब्रह्मचारियों की बढ़ती संख्या को देखते हुए एवं कच्छ में गरम वातावरण होने के कारण गौओं का कम दूध देने के कारण अभी भी गायों की आवश्यकता है। दानी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार आहुति डाल कर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा**, के नाम चैक/ ड्राफ्ट द्वारा केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

सत्यानन्द मुंजाल (मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान) **शिवराजवती आर्या** (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

एक प्रेरणा

परिवार के एक बालक को गुरुकुल में पढ़ाएं

अथवा

गुरुकुल के एक ब्रह्मचारी का वार्षिक व्यय देवें

अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टंकारा, जहां इस समय 250 ब्रह्मचारी अध्ययनरत हैं, जिन्हें वैदिक मान्यताओं के प्रचार एवं कर्मकाण्डीय संस्कारों हेतु तैयार किया जाता है। आज विश्व में कई ऐसी आर्यसमाजें हैं जहां इस उपदेशक विद्यालय के ब्रह्मचारी प्रचार कर रहे हैं, जिनमें ग्रेट ब्रिटेन, अमेरिका, गुआना, साउथ अफ्रीका, मॉरीशस, फीजी आदि देश प्रमुख हैं।

पाश्चात्य सभ्यता को मुंहतोड़ उत्तर देने के लिए यह आवश्यक है कि सुयोग्य धर्माचार्यों की संख्या अधिक से अधिक हो और हमारा युवा वर्ग इनके संदर्भ में आवे और वह अपनी मूल सभ्यता से जुड़े। आप सभी दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि अपनी आने वाली पीढ़ी को वैदिक संस्कारों से ओत-प्रोत करने हेतु इन ब्रह्मचारियों के एक वर्ष के अध्ययन का व्यय दान स्वरूप ट्रस्ट को दें। यह ऋषि ऋण से उऋण होने में आपकी आहुति होगी।

एक ब्रह्मचारी का एक वर्ष का अध्ययन/वस्त्र/खानपान का व्यय 11,000/- रुपये है।

आपसे प्रार्थना है कि अपनी ओर से अथवा अपनी संस्थाओं की ओर से कम से कम एक ब्रह्मचारी के अध्ययन व्यय की सहयोग राशि **'श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा'** के नाम चैक/ ड्राफ्ट केवल खाते में दिल्ली कार्यालय के पते पर भिजवाकर पुण्यार्जन करें। **टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।**

-: निवेदक :-

सत्यानन्द मुंजाल (मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान) **शिवराजवती आर्या** (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

महर्षि दयानन्द के प्रति श्रद्धा सुमन

❒ वेद मित्र आर्यबंधु

हर वर्ष आर्य भाई बहनें तथा नवयुवक एवं बच्चे सभी ऋषिबोधपर्व (शिवरात्रि) मनाते हैं जहाँ ऋषिवरदेव दयानन्द की पवित्र जन्म भूमि है तथा यह वही स्थान है जहाँ ऋषि को बोध हुआ तथा वह मूलशंकर से दयानन्द बने। इस पर्व पर हम सबको आत्मनिरीक्षण करके अपनी बुराइयों को दूर करने का संकल्प लेना होगा तथा ऋषि के सिद्धान्तों को समझकर और स्वयं के जीवन में उतारकर अपना और आर्यसमाज के विकास तथा वेद प्रचार के लिए समर्पित करना होगा जैसा कि ऋषि ने अन्तिम श्वास तक किया। आर्य समाज का जन्म वेद प्रचार के लिए हुआ जिसके माध्यम से हमने कभी संकल्प लिया था कि देश में बढ़ रही कुरीतियों-बुराइयों को जड़ से उखाड़ देगें। हमारे पूर्वजों ने इस दिशा में बहुत कार्य किए, परन्तु आज बुराइयों का जोर शोर से प्रचार हो रहा है। जब तक ऋषि भक्त जीवित रहे, आर्य संगठन ने हर क्षेत्र में अपने कदम बढ़ाये और सफलता मिली जिसका परिणाम हुआ कि करोड़ों भाई-बहन ओ३म् के ध्वज के नीचे आ गये। परन्तु आज आर्यों में वह जोश नहीं है। आदरणीय रामनाथ सहगल इस उम्र पें पूरे जोश एवं मनोयोग के साथ कर्मठता से सतत् प्रयास कर आप सभी को ऋषि की जन्म स्थली पर पहुँचने के लिए प्रेरित करते रहते हैं उनकी जितनी प्रशंसा की जाये थोड़ी है वह बधाई के पात्र हैं।

आज हमारे देश की बागडोर गाँधी नेहरू जैसे मानने वाले नेताओं के हाथ आ गई जहां आर्य समाज का संगठन कमजोर किया जा रहा है बच्चों पर पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव पड़ रहा है, शिक्षा का स्तर गिरता जा रहा है, गुरुडम बढ़ने लगा, धर्म की अनेकों दूकाने खुल गई और आर्य समाज संगठन सिकुड़कर बुजुर्गों तक ही रह गया। परिणाम स्वरूप आपसी ईर्ष्या द्वेष, पदलोलुपता आदि आर्य समाज की साख नष्ट हो रही है। हमें नव नवयुवकों को ही प्रेरणा देकर संगठन को बचाना होगा।

मैं बड़े ही आदर एवं नम्र निवेदन के साथ आर्यों से कहना चाहता हूँ कि इस पर्व का संदेश यही है कि हम इस दिन निम्न बातों पर गम्भीरता पूर्वक विचार करें- 1. क्या हम सत्य से प्रेम करते हैं और असत्य का परित्याग करते हैं? 2. मानव समाज आर्य समाज की निष्काम सेवा करते हैं। 3. क्या विश्वबंधुत्व की भावना हमारे अन्दर है? 4. क्या हम वैदिक सिद्धान्तों का पालन करते हैं? 5. क्या हम आपसी प्रेम भाव से संगठन को गति देते हैं? 6. प्रभु भक्ति एवं उसकी आज्ञा पालन हमारे जीवन का उद्देश्य है। 7. क्या पुराने पदाधिकारी (बुर्जुग) स्वयं ही नवयुवकों को आर्यसमाज की बागडोर संभालेंगे। 8. क्या हम स्वदेशी वस्तुओं का प्रयोग करते हैं? 9. क्या हम अपना दैनिक कार्य राष्ट्रभाषा (हिन्दी) में ही करते हैं? 10. क्या हम कर्मठ लग्नशील, श्रद्धाभक्त आर्यो को ही पदाधिकारी बनायेंगे, न कि पैसे वालों को?

ऋषि दयानन्द मानव जाति के अंध विश्वास से युक्त करने, मूर्तिपूजा छुड़ाने, धर्म के नाम पर होने वाले अधर्म का बहिष्कार कराने, सामाजिक बुराइयों को दूर करने, वैदिक समाज के निर्माण हेतु ही वह हर क्षेत्र में उतरे। उनके अमूल्य उपकारों को समाज को कभी भूलना नहीं चाहिए। ऋषि ने अकेले ही बुराई एवं असत्य से युद्ध किया तथा हर क्षेत्र में विजय रहे। उनकी शक्ति, अखंड ब्रह्मचर्य, तप त्याग, बलिदान और वेदशास्त्रों के विशाल ज्ञान में ही निहित थी। जाति के कल्याण की भावना जो उनके हृदय में थी तथा अल्प जीवन में देश एवं संगठन के लिए जो कार्य किया उसे चमत्कार कहें तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। ऋषि ने मानव जाति के उद्धार के लिए जो बीच बोये थे उनके सुन्दर फल सामने आये, हमारा भारत आजाद हुआ देश में वैदिक शिक्षा का प्रचार प्रसार हुआ। सामाजिक बुराइयाँ दूर हुई जिससे दयानन्द का नाम संसार के इतिहास में मानव समाज और भारत के उद्धारक जगत गुरु के रूप में सदैव प्रकाश मान रहेगा, इसलिए अकबर अली (पूर्वराज्यपाल) ने कहा था कि-आर्य समाज न होता तो आजादी प्राप्त करना मुश्किल था। दूसरे स्थान पर मैडम क्लैन टाकी लिखती हैं-''यह निश्चित है कि शंकराचार्य के पश्चात् दयानन्द से अधिक संस्कृत गम्भीर आध्यात्मिक, आश्चर्यजनक वक्ता और बुराइयों पर निर्भीक प्रहार करने वाला भारत को प्राप्त हुआ।

महर्षि दयानन्द की भावना भ्रान्ति एवं पक्षपात से रहित घने आवस्था से निकलकर चमको क्या यह हमारे सबके लिए कम गौरव की बात है। श्री महावीर प्रसाद द्विवेदी जी ने एक स्थान पर इस प्रकार कहा है कि मैं स्वामी जी की विद्वता और उनके कार्यकलाप जो भारत के सौभाग्य का सूचक चिन्ह मानता हूँ उनका चित्र चिरकाल तक मेरे नेत्रों के सामने रहकर मेरी आत्मा को बल और मेरे बैठने के कमरे की शोभा प्रदान करता है। स्वामी जी के विषय में इससे अधिक लिखने की शक्ति इस समय मेरे जीर्ण शरीर में नहीं है। अन्त में पुनः नम्र निवेदन करता हूं कि बोधपर्व पर स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर जिस चूहे की घटना से बोध पाकर मूलशंकर से दयानन्द बन गये, काश! हमें भी बोध हो जाये। तो भारत का प्रकाश संसार को प्रकाशमान कर देगा। हमारे शिथिल हो जाने पर अन्य विधर्मी सर उठा रहे हैं। आओ जागो। अब भी समय है यह पर्व आपको जगाने आया है स्वयं सच्चे आर्य बनकर हिन्दुओं को आर्य बनाओ। अपना तन मन धन लगाकर वैदिक क्रान्ति की ज्वाला प्रज्ज्वलित करो। यह बोध पर्व (शिवरात्रि) का संदेश है। ऋषि बोध पर्व के पुनीत अवसर पर सभी बंधुओं व बहनों को मेरी हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं। बोलो ऋषि देव दयानन्द जी अमर रहे।

- 1092, त्यागी नगर, हापुड़, उत्तर प्रदेश

हमारा अभिवादन

अभिवादन का प्राचीन और आज भी सर्वश्रेष्ठ प्रकार एक-दूसरे के प्रति 'नमस्ते' कहना है। 'नमस्ते' करने का प्रकार है-दोनों हाथों को हृदय के पास जोड़कर तथा सिर को झुकाकर 'नमस्ते' इस वाक्य का उच्चारण करना। अर्थात् मेरे मस्तिष्क में जितना ज्ञान है, हाथों में जितनी शक्ति है और हृदय में जितना प्रेम है, उस सबके साथ मैं आपकी आत्मा के प्रति नमन करता हूँ।

परस्पर 'नमस्ते' कहना और करना अभिवादन का सर्वोत्तम प्रकार है। वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत आदि में सर्वत्र नमस्ते का ही प्रयोग है। 'राम-राम', 'जय-गोपाल', 'सीता-राम', 'राधे-श्याम' आदि कहना सब अवैदिक है। जब राम आदि का जन्म भी नहीं हुआ था तब उनके माता-पिता और पूर्वज क्या करते अथवा कहते थे? नि:सन्देह वे सब 'नमस्ते' का ही व्यवहार करते थे।

स्व. स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती

PAPAYA AND ITS BENEFITS

❐ **Jyoti Gupta**

It is a wholesome fruit that is available all year round and should be taken instead of a meal. It has all the essential nutrients, minerals and fibre and vitamin A,C and E. It has a very powerful digestive enzyme called papain which is not present in any other fruit and helps digest proteins. Curative properties.

* Very useful in Improving poor digestion promoting good health.
* Ripe papaya, if eaten regularly, cures bleeding, piles, babitual constipation and chronic diarrhoea.
* Pregnant women should take ripe papaya after sixth month for healthy growth of baby. It is also useful for nursing mothers.
* Acts as a tonic for heart, liver, brain and blood.
* Energy giving food and controls premature ageing.
* Excellent for growing children.
* Lowers high cholesterol levels.
* Provides protection against colon cancer.
* Prevents prostate cancer.
* Unripe papaya is useful in menstrual irregularities.
* Improves healing from burns and reduces inflammation.
* Useful in rheumatoid arthritis and asthma.
* Prevents recurrent ear infections, colds and flu.
* Juice of papaya seeds has the power to destroy round and intestinal worms.
* Mashed papaya used on the face adds lustre and makes the skin smooth.
* Raw papaya juice cures skin disorders and can be applied on pimples.
* In case of throat disorders like tonsils, juice of raw papaya mixed with honey can be applied over affected area.

Preparation:

* Take papaya pieces and add fresh lime and rock salt for taste.
* Add slices of fresh papaya to your morning cereal, lunch time yogurt or green salads.
* After peeling the raw fruit, grate it and give a boil. Once it cools down, squeeze and place in a plate. Cut ginger and dry date lengthwise. In a pan, cook the boiled papaya and add sugar, pieces of ginger and dry date. After it is soft, add grounded cardamom, clove, cinnamon, salt and pepper. Mix well and take off the flame. Add some vinegar. This can be stored for a long time and is very good for digestion.

टंकारा गौशाला में गौ-पालन एवं पोषण हेतु अपील

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा स्थित गौशाला में दान स्वरूप प्राप्त गौ से जहां एक ओर ब्रह्मचारियों हेतु दूध प्राप्त हो रहा है, वहीं बढ़ती गायों के पालन-पोषण हेतु ट्रस्ट पर आर्थिक बोझ पड़ रहा है। आपकी जानकारी हेतु गौशाला से प्राप्त दूध को बेचा नहीं जाता है। ऐसी स्थिति में आप सभी आर्यजनों, दानदाताओं, गौभक्तों से प्रार्थना है कि इस मद में ट्रस्ट की सहायता करने की कृपा करें। एक गाय के वार्षिक पालन-पोषण पर 5000/-रुपये व्यय आ रहा है, जिससें हरा चारा एवं पौष्टिक आहार जो चारे में मिलाया जाता है तथा गौशाला का रखरखाव सम्मिलित है। आप सभी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार राशि भेजकर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001** के पते पर पर भिजवाकर कृतार्थ करें। **टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।**

सत्यानन्द मुंजाल (मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान) **शिवराजवती आर्या** (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

टंकारा समाचार के प्रसार में सहयोग दें

'टंकारा समाचार' उलट-पलटकर रख देने लायक नहीं, बल्कि गंभीरतापूर्वक पढ़ने लायक पत्रिका है। यदि आप इसे पढ़ेंगे तो हमें विश्वास है कि पसन्द भी करेंगे और चाहेंगे कि इसे और लोग भी पढ़ें। कृपया अपने जैसे गम्भीर पाठकों से 'टंकारा समाचार' की चर्चा करें, उन्हें इसका ग्राहक बनने के लिए प्रेरित करें।

'टंकारा समाचार' का वार्षिक शुल्क 100/- रूपये एवम् आजीवन शुल्क 500/- रूपये हैं।

आप उपरोक्त राशि श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम से चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर, आर्य समाज (अनारकली), मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 के पते पर भिजवा कर सदस्य बन सकते हैं।

ऋषि बोधोत्सव के उपलक्ष्य में विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन

आगामी ऋषि बोधोत्सव 2014 के उपलक्ष्य में टंकारा ट्रस्ट की ओर से विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया है। जिसमें भाग लेकर युवाशक्ति अपनी प्रतिभा उजागर करें।

वॉलीबॉल (शूटिंग) टूर्नामेन्ट
(सौराष्ट्र प्रदेश के युवाओं के लिए)

विजेता टीम को शिल्ड प्रदान किया जाएगा। ❑ खिलाड़ियों को पुरस्कृत किया जाएगा। ❑ प्रवेशपत्र दिनांक 20 फरवरी 2014 तक स्वीकृत होंगे। ❑ यह टूर्नामेन्ट दिनांक 20 से 24 फरवरी 2014 के बीच में होंगी।

प्रश्नमंच प्रतियोगिता
(सौराष्ट्र प्रदेश की शिक्षण संस्थाओं के विद्यार्थियों के लिए)

महर्षि दयानन्द के जीवन, कार्य, आर्यसमाज के सिद्धान्त और सामान्य ज्ञान पर प्रश्न पूछ जायेंगे। ❑ कक्षा 8 से 10 तक के छात्र भाग ले सकते हैं। ❑ एक विद्यालय से दो विद्यार्थी भाग ले सकते हैं। ❑ भाग लेने के इच्छुक विद्यालय के प्राचार्य अपने विद्यार्थियों के नाम 20 फरवरी 2014 तक संयोजक को पहुंचा दे। ❑ प्रथम सिलेक्शन राउण्ड दिनांक 26.02.2014 को प्रातः 10.00 बजे टंकारा ट्रस्ट परिसर में होगा। जिसमें प्रथम 14 स्थान प्राप्त करने वालों का अन्तिम राउन्ड (मौखिक) उसी दिन दोपहर 2.00 बजे ट्रस्ट परिसर में आयोजित होने वाली ऋषि बोधोत्सव में मुख्यमंच पर होगा। ❑ संदर्भ के लिए महर्षि दयानन्द जीवन चरित्र, प्राचीन वैदिक सिद्धान्त ज्ञान पुस्तकों का सहारा ले सकते हैं। ❑ प्रथम तीन विजेताओं को नकद पुरस्कार क्रमशः 500, 300, 200 प्रदान किया जायेगा, अन्यों को सांत्वना पुरस्कार दिया जायेगा। ❑ प्रत्येक को प्रमाणपत्र दिया जायेगा। ❑ बाहर से आने वाले प्रतियोगितयों को टंकारा तक आने-जाने का किराया दिया जायेगा। ❑ भोजन-आवास की सुविधा निःशुल्क रहेगी।

डॉ. मुमुक्षु आर्य गुरु विरजानन्द सरस्वती पुरस्कार

समस्त गुरुकुलों के विद्याार्थियों को सूचित किया जाता है कि टंकारा में प्रतिवर्ष ऋषि बोधोत्सव पर डॉ. मुमुक्षु आर्य गुरु विरजानन्द सरस्वती पुरस्कार उस विद्यार्थी को दिया जायेगा जिसे योगदर्शन के समस्त 194 सूत्र एवं यजुर्वेद के 40वे अध्याय के सब मन्त्र शुद्ध उच्चारण व भावार्थ सहित कंठस्थ होंगे। जो ब्रह्मचारी इस प्रतियोगिता में भाग लेना चाहते हैं, वे अपना नाम अपने गुरुकुल के आचार्य के माध्यम से टंकारा गुरुकुल के प्राचार्य/प्रतियोगिता संयोजक को भेज दें। प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले ब्रह्मचारी को पांच हजार रूपये नगद व स्मृति चिह्न से पुरस्कृत किया जायेगा।

बाहर से आने वाले प्रतियोगियों को टंकारा तक आने-जाने का किराया दिया जायेगा। (एक गुरुकुल से केवल दो प्रत्याशी ही आ सकते है।) ❑ भोजन-आवास की सुविधा निःशुल्क रहेगी। ❑ भाग लेने के लिए गुरुकुल के प्राचार्य अपने छात्रों के नाम दिनांक 20 फरवरी 2014 तक पहुंचा देवें। ❑ यह प्रतियोगिता ऋषि बोधोत्सव पर दिनांक 26.02.2014 दोपहर 2.00 से 5.00 के सत्र में होगी।

अधिक जानकारी व नाम भेजने के लिए प्रतियोगिता संयोजक से सम्पर्क करें।

आचार्य रामदेव, (प्राचार्य म.द. उपदेशक महाविद्यालय)
टंकारा-363650 (जिला-मोरबी), गुजरात, मो. 9913251448
हंसमुख परमार, प्रतियोगिता संयोजक, मो. 9879333348

एहसान दयानन्द के

❑ **ओम प्रकाश बजाज**

फानूस बनके जिसकी हिफाजत हवा करे।
वह शमां क्या बुझेगी जिसे रोशन खुदा करे॥

सज्जनो! संसार के समस्त विद्वान यह मानते हैं कि वेद दुनिया की सबसे प्राचीन पुस्तक है। वेदों का सन्देश है 'मनुर्भव' अर्थात् मनुष्य बन। महाभारत के युद्ध के बाद हालात ऐसे हो गए कि मेरे देश में वेदों का प्रचार समाप्त हो गया तथा वैदिक ज्ञान लुप्त हो गया। चारों ओर अज्ञानता और जहालत का घोर अन्धकार छा गया। जनता अपना रास्ता भूल गई। समाज में कुप्रथाएं उत्पन्न हो गई धर्म के नाम पर पाखण्ड फैल गया। ऐसे समय में ऋषि दयानन्द वेदों की जलती मशाल लेकर आए। अज्ञान के अन्धकार में भूले भटके लोगों को मानवता का मार्ग दिखाया। स्वामी जी ने धर्म व भक्ति का सही रूप समझाते हुए अनेक सामाजिक सुधार किए। उनका सबसे भारी उपकार मेरी माताओं, बहनों पर है। स्त्री-जाति की दुर्दशा को देखकर उन्हें विद्या पढ़ने, शिक्षा ग्रहण करने का अधिकार दिया। इसके परिणामस्वरूप आज मेरे देश में अनेक कन्या महाविद्यालय खुले हुए हैं। महिलाएं पुरुषों के साथ उच्चपदों पर कार्य कर रही हैं। देश में फैली हुई सतीप्रथा, दहेज जैसी कुरीतियों को दूर करके मानवजाति का उद्धार किया। भारत को आजाद कराने और स्वतंत्रता की प्रेरणा देनेवाला सबसे पहला व्यक्ति स्वामी दयानन्द जी को माना गया है। जब एक अंग्रेज, कलेक्टर ने पूछा कि स्वामी जी आपको हमारा राज्य-शासन कैसा लगता है तब ऋषि ने बड़ी निर्भीकता से उत्तर दिया-'विदेशी राज से स्वदेशी राज लाख दर्जे अच्छा होता है। स्वामी जी के उपकारों की कोई सीमा नहीं और मुझे लम्बा लेख लिखने की आदत नहीं। अतः कवि के शब्दों में निम्न पंक्तियों लिखकर विराम लगाता हूँ-

गिने जायें मुमकिन है सहरा के जर्रे, समन्दर के कतरे,

बी-2, गगन विहार, गुप्तेश्वर, जबलपुर-482001, म.प्र.

गोमाता की करूण पुकार

❒ आचार्य डॉ. श्रीपवन कुमार जी शास्त्री

मैं हूँ गाय, कामधेनु की वंशजा। जबसे मैं धरती पर आयी हूँ, तभी से मैं अपना मधुर दूधा पिलाकर मानव जाति का पालन कर रही हूँ। मेरे बच्चे भी नाना प्रकार से मनुष्यों की सेवा कर रहे हैं, किन्तु दुःख है कि मानव जाति मेरा समुचित सम्मान नहीं कर रही है। विशेषत: आधुनिक युग का नमुष्य तो मेरे प्रति सर्वथा निर्दयी हो गया है।

मुझे अपना स्वर्णिम अतीत याद है। मेरी रक्षा के लिए भगवान संकल्पित भाव से समय-समय पर अवतरित होते रहे हैं। भगवान श्रीकृष्ण ने मेरी अद्भुत सेवा की थी। राजा दिलीप व्याघ्र से मेरी रक्षा हेतु अपने शरीर का मांस देने को तत्पर हो गये थे। प्राचीन काल में मुझे गोमाता कहकर आदर दिया जाता था। लोग अत्यन्त श्रद्धा के साथ मुझे अपने आँगन में बाँधते थे और मुझे देवतुल्य जानकर सुबह-शाम (मुझे) प्रणाम करते थे। मेरे दर्शन को वे शुभ शकुन मानते थे। वे प्रतिदिन मुझे हरा चारा खिलाने दूरतक ले जाते तथा लौटनेपर नहला-धुलाकर वस्त्राभूषणों से अलंकृत करके रखते थे।

वे प्राचीन लोग अपनी रसोई में बनी हुई पहली रोटी को मुझे गुड़के साथ खिलाकर ही स्वयं भोजन करते थे। वे मुझे परिवार का एक सम्मानित सदस्य मानते थे तथा मेरी सुख-सुविधा का पूरा ध्यान रखते थे। वृद्ध हो जाने तथा दूध न दे सकने की स्थिति में भी वे सहसा मेरा परित्याग नहीं करते थे, अपितु यावज्जीवन मेरा पालन-पोषण करके मेरी मृत्यु हो जाने पर मेरा अन्तिम संस्कार कर देते थे।

वे पुराने लोग मेरे दूध पर मेरे बच्चों का प्रथम अधिकार मानते थे तथा जब मेरे बच्चे मेरा दूध पीकर तृप्त हो जाते थे, तभी वे अपने लिए मेरा दूध दुहते थे। मैं उनकी निष्ठा में अभिभूत होकर स्वयं ही उनके बच्चों के लिए पर्याप्त दूध दे देती थी।

किन्तु अब ऐसा नहीं रह गया है। आज लोग मुझे अपने घरों में नहीं पालते। ले-देकर कुछ लोग तथा कुछ दुग्ध-व्यवसायी ही हैं, जिनके यहाँ मुझे शरण मिलती है, किन्तु ये ठहरे व्यवसायी। अधिकाधिक लाभार्जन ही इनका उद्देश्य रहता है। थोड़ा सा चारा खिलाकर मेरे थन से प्रथम से लेकर अन्तिम बूँद तक समस्त दूध निकाल लेना इनका रोजमर्रा का काम है। इतना ही नहीं, इसके लिए कुछ तो आजकल मेरी नाजुक गर्दन में और कभी-कभी तो मेरे थन में सुई चुभोने का क्रूर कृत्य भी करने लगे हैं। इस सुई से मुझे जो मर्मान्तक पीड़ा होती है, उसे तो सर्वान्तर्यामी भगवान श्रीगोविन्द ही जान सकते हैं। मैं सीधी-सादी नारीजाति की एक बेजुबान जीव हूँ। मैं किसी से लड़ती-झगड़ती नहीं। यदि कोई दो डण्डा मुझे मार भी देता है तो मैं चुपचाप सह लेती हूँ, पर कहूँ किससे? यह समझ में नहीं आता। देश की सरकार बाघों आदि के लिए अभयारण्य बनाती हैं, किन्तु मेरी रक्षा के लिए मौन रहती है। प्रतिदिन मेरे सहस्त्रों वंशजों को अकाल मौत के घाट उतार दिया जाता है, परन्तु सरकार चुप रहती है। नारीविमर्श करने वाली मेरी मानवी बहनें भी मेरी पीड़ा पर दृष्टिपात नहीं करती। अब तो श्रीकृष्ण ही शरण्य हैं। ''हे गोविन्द। राखो शरण।''

आर्य परिवार युवक-युवती छठा वैवाहिक परिचय सम्मेलन

अब तक 235 से अधिक विवाह संपन्न

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के निर्णय एवं निर्देशानुसार दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा छठा आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन आगामी 19 जनवरी 2014 रविवार को प्रात: 10 बजे से आर्य समाज मल्हारगंज इंदौर (म.प्र.) पर आयोजित किया जा रहा है।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य ने बताया कि 25 जुलाई 2010, 24 अप्रैल 2011, 8 अप्रैल 2012, 28 अक्टूबर 2012 एवं 14 जुलाई 2013 को हुए आर्य परिवार युवक-युवती परिचय सम्मेलनों के अच्छे परिणाम आए हैं। जानकारी मिली है कि पांचों सम्मेलनों से अब तक लगभग 200 से अधिक रिश्ते हो चुके हैं। इसकी उपयोगिता को देखते हुए इस बार सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने निर्णय किया है कि यह युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन मध्य भारत के महानगर इंदौर में आयोजित किया जाये।

राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित होने जा रहे इस छठे आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन हेतु आर्य कार्यकर्ता आर्य परिवारों से संपर्क बना रहे हैं आर्य युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन के प्रति काफी उत्साह है तथा वे अपने विवाह योग्य बच्चों के रजिस्ट्रेशन करा रहे हैं। राष्ट्रीय संयोजक अर्जुनदेव चड्डा ने बताया कि बायोडाटा फार्म भरकर साथ में पंजीयन शुल्क का ड्राफ्ट अथवा मनी आर्डर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 के पते पर भेजकर रजिस्ट्रेशन करा सकते हैं। रजिस्ट्रेशन फार्म मोबाइल नम्बर 09540040339 (श्री विजय आर्य) पर अपने डाक का पता भेजकर मंगा सकते हैं, अथवा हमारी वेबसाइट www.thearyasamaj.org से डाउनलोड भी कर सकते हैं तथा ऑनलाइन भी फार्म भर सकते हैं। रजिस्ट्रेक्शन फार्म 31 दिसम्बर 2013 तक सभा कार्यालय में भिजवा देवें, जिससे आशार्थी का नाम परिचय विवरण पुस्तिका में प्रकाशित किया जा सके। श्री विनय आर्य ने बताया कि सम्मेलन में भाग लेने बाहर से आये आर्य परिवारों के ठहरने, चाय-नाश्ते व दोपहर के भोजन की निशुल्क व्यवस्था कार्यक्रम स्थल पर रहेगी। - राष्ट्रीय संयोजक, अर्जुनदेव चड्डा, मो. 09414187428

ટંકારા સમાચારના દસ વર્ષ અને હું.

પં. રમેશ ચન્દ્ર મહેતા 'ટંકારામિત્ર'
Email:- pt.rammehta@gmail.com

આફ્રિકામાં આર્યસમાજની સેવામાંથી મુક્ત થઈને ઈ.સ. ૨૦૦૩માં ભારત પાછો આવ્યો. ૨૦૦૪ના ઋષિ મેળામાં ભાગ લેવા ટંકારા આવ્યો. ટ્રસ્ટના મન્ત્રી શ્રી રામનાથજી સહગલ, પ્રધાન શ્રી સત્યાનન્દજી મુંજાલ અને યુવા મન્ત્રી શ્રી અજય સહગલે મારું સ્વાગત કર્યું. મેં એક લેખ ટંકારા સમાચારમાં પ્રસિદ્ધિ માટે સમ્પાદક શ્રી અજય સહગલને આપ્યો. લેખ હિન્દીમાં હતો. અજયજીએ કહ્યું તું તો ગુજરાતીમાં લેખ લખ. અમારે ગુજરાતના ઋષિભક્તોના લાભાર્થે ગુજરાતી લેખ પણ આપવા છે.

એક લેખ ગુજરાતીમાં લખીને મેં મોકલ્યો. લેખ પ્રસિદ્ધ થયો, પણ મને દુ:ખ થયું જોડણીની અસાધારણ ભૂલો હતી, ફોન્ટ પણ બરાબર નહોતા. મેં અજયજીને ફરિયાદ કરી તો કહે કે અમારી પાસે ગુજરાતી પ્રૂફ રીડર નથી. પછી તો ટંકારા સમાચારના પૃષ્ઠ આદિને ધ્યાનમાં રાખીને ગુજરાતી ટાઈપ-સેટ આદિ કરીને દિલ્હી મોકલવાની જવાબદારી મેં જ ઉપાડી. મારે માટે સરળતા હતી કે મારા આફ્રિકાના કાર્ય દરમ્યાન જ મેં કોમ્પ્યુટર વાપરવાની તેમજ તેના પર ગુજરાતી, હિન્દી આદિ ટાઈપ કરવાની શરૂઆત કરી દીધી હતી.

અજયજીના આગ્રહને માન આપીને ગુજરાતીમાં લેખ મોકલતો તો હતો, પણ મનમાં થતું હતું કે હિન્દીમાં લખવાનો મોકો મળત તો વધારે પાઠકો સુધી પહોંચી શકાત.

ગુજરાતીમાં લેખ છપાવા મંડ્યા. એક દિવસ દેહરાદૂનથી એક પ્રસિદ્ધ વિદ્વાનનો ફોન આવ્યો. મારી સાથે હિન્દીમાં જ વાતચીત કરી અને મને કહ્યું કે તમારો લેખ ખૂબ ગમ્યો. મને આશ્ચર્ય થયું. મેં પુછ્યું કે તમને ગુજરાતી આવડે છે, ઉત્તર મળ્યો ના. ફરીથી પુછ્યું તો લેખ કેવી રીતે વાંચ્યો, ઉત્તર મળ્યો - લેખ વાંચીને સમજતા મને સાત દિવસ લાગ્યા. ગુજરાતીમાં લેખ જોઈને મનમાં ઉત્કંઠા થઈ કે ઋષિ દયાનન્દની માતૃભાષા ગુજરાતી પણ સમજવી જોઈએ. તમારો લેખ એ માટે માધ્યમ બન્યો. મને થયું કે માત્ર ગુજરાતી ભાષી પત્રિકાથી કદાચ આવો પ્રભાવ ન પણ પડ્યો હોત. ટંકારા સમાચારમાં ગુજરાતી લેખના કારણે આટલો ફાયદો તો થયો. પછી તો અનેક સ્થળોએથી આવી રીતે ફોન આવવા લાગ્યા.

એક ફોન તો આવ્યો જેને કારણે પહેલા ગુસ્સો આવ્યો, પણ પછી થયું કે ટંકારાસમાચારનો આવો પણ લાભ પણ લાભ લેતા હોય તો ખોટું. નથી. એક દિવસ રાત્રે લગભગ અગિયાર વાગ્યે મધ્યપ્રદેશના એક ગામમાંથી એક બહેનનો ફોન આવ્યો. પુછ્યું કે આપ હી રમેશચન્દ્ર બોલ રહે હૈ – મારો ઉત્તર સાંભળીને બહેન કહે કે મારી પુત્રીને ગુરુકુલમાં ભણાવવી છે – કયા ગુરુકુલમાં મોકલું. પહેલા ગુસ્સો આવ્યો પણ પછી તત્કાલ ઉપલબ્ધ જાણકારી આપી.

એક સંસ્થાના આચાર્યે અનુમતિ આપતા ગુજરાતીમાં એક લઘુ પુસ્તિકા તૈયાર કરી. પણ સંસ્થાગત દ્વેષના કારણે અંતિમ સમયે આચાર્યજીએ એના પ્રકાશનની જવાબદારી લેવાની ના પાડી. મહેનત વ્યર્થ ન જાય એટલે ટંકારાસમાચારમાં જ ક્રમશ: લેખ સ્વરૂપે એનું પ્રકાશન કર્યું.

હવે તો ટંકારાસમાચાર ગુજરાતની આર્ય સંસ્થાઓની ગતિવિધિ લોકો સમક્ષ પહોંચાડવાનું કામ પણ કરે છે.

સંક્ષિપ્તમાં કહીએ તો આજે દસવર્ષની યાત્રા પછી એટલું ચોક્કસ જ કહી શકાય કે ટંકારાસમાચાર આર્યજગતની એક માત્ર એવી પત્રિકા છે કે જેમાં હિન્દી, ગુજરાતી અને અંગ્રેજીમાં લેખ પ્રકાશિત થતા હોય. આપણે પત્રિકાને બહુભાષી પત્રિકા પણ કહી શકીયે.

શ્રદ્ધાંજલી

આર્યસમાજ જુનાગઢના શિલ્પી, સમાજ સુધારક કન્યા કેળવણીના હિમાયતી અને પ્રસિદ્ધ ઉદ્યોગપતિ શ્રી પેથલજીભાઈ ચાવડા પોતાના કર્તવ્યધર્મોનું પાલન કરતા કરતા ઈશ્વરીય ન્યાયવ્યવસ્થા પ્રમાણે પરલોક પ્રયાણ કરી ગયા છે.

જુનાગઢમાં આર્યસમાજ ભવનનું નિર્માણ એમની દીર્ઘદષ્ટિ અને પુરુષાર્થનું પરિણામ છે. જુનાઢમાં આર્યસમાજ જાગૃત રહે તે માટે અનેક યોજનાઓના જનક હતા. એક સમયે મહર્ષિ દયાનન્દજીના નામે મહિલા કોલેજની સ્થાપના પણ કરી હતી.

ટંકારામાં ગુરુકુલમાં આચાર્ય રામદેવજીના બ્રહ્મત્વમાં આયોજિત યજ્ઞમાં વિશેષ આહુતિઓ આપવામાં આવી હતી. ટંકારા ટ્રસ્ટના ટ્રસ્ટિઓ, ગુરુકુલના આચાર્યજી અને બ્રહ્મચારિઓની શ્રદ્ધાંજલી.

मानव-मात्र के लिए स्वामी दयानन्द जी की आदर्श शिक्षायें

❐ आचार्य भगवानदेव वेदालंकार (वैदिक प्रवक्ता)

इस आर्यवर्त्त देश में समय-समय पर ऋषियों का, योगियों का त्यागी-तपस्वी महानपुरुषों का अवतरण होता रहा है जैसे- सतयुग में सत्यवादी राजा हरिशचन्द्र जी हुए, त्रेतायुग में मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी, द्वापर में योगीराज श्री कृष्ण जी का जीवन अनुकरणीय रहा, कलियुग में वेदों के विद्वान, धर्मशास्त्रों के ज्ञाता, तर्क शिरोमणि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की आदर्श शिक्षायें, प्रेरणाप्रद विचार, उनका आदर्श जीवन, त्याग-तप मानव-मात्र के लिए अनुकरणीय रहा है। उनके कल्याणकारी आदर्शों पर, शिक्षाओं पर चलने से ही मानव मात्र का कल्याण सम्भव है।

1. 'सत्यार्थ प्रकाश' पढ़ने की शिक्षा- स्वामी दयानन्द जी बड़े ही ज्ञानी पुरूष थे। उन्होंने पूरे अनुभव से, वेद-शास्त्रों के प्रमाण देकर एक शोध ग्रन्थ, ज्ञान का भण्डार, अनेक शिक्षाओं से परिपूर्ण, क्रान्तिकारी ग्रन्थ का प्रकाश किया, जिसको पढ़कर, स्वाध्याय करके न जाने कितने सपूतों ने अपने जीवन का कायाकल्प किया है। जीवन-जीने के वास्तविक उद्देश्य को जाना। उन महापुरुषों में उदाहरण स्वरूप कुछ नाम जैसे कि स्वामी श्रद्धानन्द जी, महात्मा हंसराज जी, स्वामी दर्शनानन्द जी, पं. लेखराम जी, गुरूदत्त विद्यार्थी, पं. अखिलानन्द जी, स्वामी सत्यानन्द जी, श्याम जी, कृष्ण वर्मा, ब्रह्मचारी रामप्रसाद 'बिस्मिल' आदि अनेक भारत-माता के वीर सपूतों ने 'सत्यार्थप्रकाश' को पढ़ा और उसके बाद जीवन-जीने का लक्ष्य प्राप्त किया। यह ग्रन्थ 14 चौदह समुल्लास अर्थात् चौदह विभागों में रचा गया है।

सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ का प्रयोजन- ''मेरा इस ग्रन्थ के बनाने का मुख्य प्रयोजन सत्य-सत्य अर्थ का प्रकाश करना है, अर्थात् जो सत्य है उसको सत्य और जो मिथ्या है उसको मिथ्या ही प्रतिपादन करना सत्य अर्थ का प्रकाश समझा है। इसलिए विद्वान आचार्यों का यही मुख्य काम है कि वे स्वयं अपना हित-अहित समझकर सत्यार्थ का ग्रहण और मिथ्यार्थ का परित्याग करके सदा आनन्द में रहें।

2. ईश्वर के 'ओ३म्' नाम का ध्यान करने की शिक्षा- महर्षि स्वामी दयानन्द जी से पूर्व देश में लोग वेद के सच्चे मार्ग को भूल चुके थे। बहुदेवतावाद का प्रचलन था। ईश्वर के स्थान पर लोग प्रकृति की, तुलसी, पीपल जैसे वृक्षों की पूजा करने लगे थे। कोई काली देवी, कोई दुर्गा, कोई लक्ष्मी, कोई गणेश, कोई शिवलिंग, कोई चतुर्भुज धारी विष्णु की, कोई सर्वधारी शिव की मूर्तियां बनाकर, गन्डे, ताबीज, तिलक, मालायें पहनकर, झांज-मंजीरा बाजा बजा-बजाकर, नाच-कूद उछल-उछल कर पूजा करने की वेद-विरूद्ध परिपाठी जन्म ले चुकी थी। ऐसे समय में महर्षि ने हमें वेदों का, शास्त्रों का, उपनिषदों का प्रमाण देकर ईश्वर के सर्वरक्षक, सृष्टिकर्त्ता 'ओ३म्' नाम का ध्यान करने की शिक्षा प्रदान की।

''एको ब्रह्म द्वितीयो न अस्ति'' ईश्वर जो 'ब्रह्म' रूप है। सबसे बड़ा है। सबसे महान् है वह एक ही है। वह दो, तीन या उससे अधिक संख्या वाला नहीं है। **''ओं खम्ब्रह्म''** यजुर्वेद अ.40, मन्त्र-17 अर्थात् उस आकाश के समान व्यापक परमेश्वर का मुख्य और निज नाम **'ओ३म्'** ही है। हमें उसी एक परब्रह्म परमेश्वर रूपी 'ओ३म्' का ही ध्यान करना चाहिए। सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम समुल्लास में ईश्वर के सौ नामों की व्याख्या की गई है जैसे-सबसे बड़ा होने से ईश्वर का नाम 'ब्रह्म', जो बहुत प्रकार से जगत् को प्रकाशित करे इससे ईश्वर का नाम 'विराट्' जो ज्ञानस्वरूप, सर्वज्ञ, जानने प्राप्त होने और पूजा करने योग्य है, इससे उस परमेश्वर का नाम 'अग्नि' है। जो शिष्ट, मुमुक्ष, मुक्त और धर्मात्माओं से ग्रहण किया जाता है, जो सबसे श्रेष्ठ है, इसलिए उसका नाम 'वरूण' है जो अखिल ऐश्वर्ययुक्त है, इससे उस परमात्मा का नाम 'इन्द्र' है जो चर और अचररूप जगत् में व्यापक होने से परमात्मा का नाम 'विष्णु' है। जो सबका रक्षक जैसा पिता अपने सन्तानों पर सदा कृपालु होकर, उनकी उन्नति चाहता है इससे उसका नाम 'पिता' है। जैसे पूर्ण कृपायुक्त जननी अपनी सन्तानों का सुख और उन्नति चाहती है वैसे परमेश्वर भी सब जीवों की बढ़ती चाहता है इससे परमेश्वर का नाम 'माता' है। जो प्रकृति आदि लड़ और सब जीवन प्रख्यात पदार्थो का स्वामी वा पालन करने हारा है, इससे उस ईश्वर का नाम 'गणेश' वा 'गणपति' है। जो समग्र ऐश्वर्य से युक्त वा भाजने योग्य है इसलिए उस ईश्वर का नाम 'भगवान' है। जो कल्याण स्वरूप ओर कल्याण का करने हारा है इसलिए उस परमेश्वर का नाम 'शिव' है। ये उपरोक्त सभी नाम परमेश्वर के ही हैं परन्तु इनसे भिन्न परमात्मा के असंख्य नाम हैं क्योंकि जैसे परमेश्वर के अनन्त गुण-कर्म स्वभाव हैं वैसे उसके अनन्त नाम हैं। ये सभी नाम 'ओ३म्' के ही विशेषण हैं। ध्यान, मनन एवं चिन्तन करना चाहिए। इससे जीवन में सुख, शान्ति और आनन्द की वृद्धि होगी। समस्याओं का सफल निदान होगा। किसी कवि का यह कथन कितना सार्थक है कि-

''ओम् नाम सबसे बड़ा, इससे बड़ा न कोय।
जो ओम् का सुमरन करे, तो दुःख काहे को होय।।''
स्वाँस-स्वाँस पर ओ३म्, भज वृथा स्वाँस मत खोय।
ना जाने इस स्वाँस का, आवन होय न होय।।

अन्धविश्वासों से बचने की शिक्षा-स्वामी दयानन्द जी का जन्म जिस युग में हुआ, उस युग में चारों ओर देश में, समाज में तथा परिवारों में अविद्या, अन्धविश्वासों का अज्ञानान्धकार फैला हुआ था। उदाहरण के रूप में- (1) व्यक्ति अपने काम पर जा रहा होता, बिल्ली रास्ता काट जाती, व्यक्ति डर जाता था, अब काम नहीं बनेगा। (2) किसी को उसी समय छींक आ जाती, चाहे वह छींक जुखाम, नजला या बीमारी अवस्था में ही आयी हो। (3) कोई एकाक्षी (काणा) व्यक्ति सामने आ जाता, उसे भी अपशगुन मान लिया जाता था। (4) कोई गरीब व्यक्ति जो आर्थिक दृष्टि से पिछड़ा होता था, या सफाई कर्मचारी, जन्मजात अपने को ब्राह्मण मानने वाले व्यक्ति से छू जाता था, तो अनर्थ हो जाता था। (5) इसी प्रकार उस समय स्त्रियों को पढ़ाना, अच्छा नहीं माना जाता था, नारी घर की चार दीवारी में पर्दे में कैद थी। गांव, देहात, मुसलमान परिवारों में आज भी कन्याएँ शिक्षा-ग्रहण नहीं कर पा रही हैं। इसके अतिरिक्त बाल-विवाह, अनमेल-विवाह, सती-प्रथा, विधवा-विवाह तथा बलि-प्रथा जैसी कुरीतियां, कुप्रथाएं, कुत्सित रीति-रिवाजों का स्वामी दयानन्द जी ने और उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज ने उन अन्धविश्वासो के लिए विनाश के लिए 'सत्यार्थ प्रकाश' की रचना की, वैदिक साहित्य लिखा। गुरुकुलों की स्थापना की।

छुआछूत, भूत, प्रेत, फलित-ज्योतिष,, तिलक, मालाओं का धारण करना, तान्त्रिकों के भ्रम जलन में फंसना इत्यादि बातों के बहकावे में न आना। जिनसे सन्तानें, बच्चे, बड़े, बूढ़े किसी धूर्त के माया-जाल में न फंसने सकें ऐसी शिक्षा का उपदेश किया।

माता-पिता एवं आचार्य की शिक्षा- शास्त्रों में बच्चों के तीन उत्तम शिक्षक माने गये हैं अर्थात् एक माता, दूसरा पिता और तीसरा आचार्य। महर्षि याज्ञवल्क्य का वचन है-

''मातृमान् पितृमान् आचार्यवान् पुरुषो वेद'' -शतपथ ब्राह्मण अर्थात् इन्ही तीनों की उत्तम शिक्षा से मनुष्य ज्ञानवान् होता है वह कुल धन्य! वह सन्तान बड़ा भाग्यवान्। जिसके माता और पिता धार्मिक विद्वान हो। माता-पिता को अति उचित है कि वे शुद्ध शाकाहारी भोजन पर अधिक ध्यान दें। मद्य, नशीले, पदार्थों, बुद्धिनाशक, रूक्ष पदार्थों का परित्याग कर, जो शान्ति, आरोग्य, बल, बुद्धि, पराक्रम और सुशीलता को बढ़ाने वाले पदार्थ हैं जैसे-दूध, घृत, शहद, फल, सब्जी तथा उत्तमोत्तम अन्न पान की शिक्षा दें।

किसी ने ठीक ही कहा है कि-

''जैसा खाये अन्न वैसा बने मन, जैसा पिये पानी वैसे बने वाणी''।

माता की शिक्षा- बच्चे की पहली गुरु 'माता' को माना गया है। ''माता निर्माता भवति'' माता बच्चे को लोरियाँ सुना-सुना कर संस्कार देती है। बच्चे का निर्माण करती है। बालकों को माता सदा उत्तम शिक्षा करे जिससे सन्तान सभय हों और किसी अंग से कुचेष्टा न करने पावें। छोटे-बड़े, मान्य, पिता, माता, गुरु, आचार्य आदि के साथ शिष्टाचार का व्यावहारिक ज्ञान, बातचीत करने का तरीका उनके पास उठने-बैठने आदि की भी शिक्षा दिया करें जिससे कहीं उनका अयोग्य व्यवहार न हो सके बल्कि सर्वत्र प्रतिष्ठा हो। सन्तान किसी धूर्त, ढोंगी, बेहरूपिया के बहकावे में न आवें। जिससे फलित ज्योतिष, भूत-प्रेत आदि मिथ्या बातों का विश्वास न हो।

इसी प्रकार पिता शिक्षा करे कि हमारी सन्तानें, चोरी, आलस्य, प्रमाद, नशीले मादक द्रव्य, मिथ्या भाषण, हिंसा, क्रूरता, ईर्ष्या द्वेष, मोह आदि दोषों को छोड़ने के लिए तैयार रहें। छल, कपट, धोखा देना, अभिमान करना, कृतध्नता से अपना हृदय दु:खी होता है। दूसरों का तो कहना ही क्या। क्रोधादि दोष छोड़ और कटु-वचन को त्याग कर, शान्त और मधुर वचन ही बोले। बड़ों का सम्मान करें, उन्हें ऊँचा आसन दें, विनम्रता से 'नमस्ते' करें।

''यान्यस्माकं सुचरितानि तानि त्वयोपा स्यानि नो इतराणि'' यह तैत्तिरीयोपनिषद् का वचन है। माता, पिता और आचार्य अपनी सन्तान और शिष्यों को सदा यह उपदेश करें कि जो हमारे धर्मयुक्त कर्म हैं उन उन का ग्रहण करें और यदि हमारे जीवन में भी यदि कोई दुर्गुण, दुर्व्यसन, दुर्व्यवहार आदि दोष, कमजोरी हैं उनका त्याग करें। सज्जनों का संग और दुष्टों का त्याग करें। विधिपूर्वक ईश्वर की उपासना, प्रार्थना करें। मद्य, शराब, अण्डा, मांस आदि के सेवन से अलग रहें। जिस प्रकार आरोग्य, विद्या और बल प्राप्त हो, उसी प्रकार के शुद्ध शाकाहारी भोजन करें।

इस प्रकार सन्तानों को उत्तम शिक्षा, विद्या, गुण, कर्म और स्वभाव रूप आभूषणों का धारण कराना माता, पिता, आचार्य और सम्बन्धियों का मुख्य कर्म है। काश! आज के माता, पिता और शिक्षक अपनी नई पीढ़ी को सही दिशा-बोध देने में अहम भूमिका निभाते।

आज के युग में महर्षि दयानन्द जी की शिक्षा की और अधिक आवश्यकता है-कहने की और अधिक आवश्यकता नहीं, सारी उन्नतियों का केन्द्र ऋषि-महर्षियों की वैदिक शिक्षा है। आज की युवा पीढ़ी, नवयुवक और नवयुवतियाँ दिशा, भ्रमित हैं। उनके दिशाहीन आदर्श टी. वी. चैनल या फिल्मों के नायक एवं नायिकायें हैं, जिनके द्वारा लगातार अशीलता, चरित्रहीनता, माडल के नाम पर अर्द्धनग्नता, पॉप डांस आदि की अपसंस्कृति फैलाई जा रही है। जिससे नैतिक मूल्यों का पतन हुआ है। आज के इस अत्यन्त भौतिक युग में भी महर्षि दयानन्द जी की प्रेरणाप्रद आदर्श शिक्षाओं की और अधिक आवश्यकता है जिसका एक संक्षिप्त सा उदाहरण लेख के माध्यम से प्रस्तुत किया है।

- ए 94, विकासनगर, फेस-3, नई दिल्ली-110059, मो. 9250906201

स्वाभिमानी दार्शनिक

बिख्यात दार्शनिक एरिक हौफर बचपन से ही मेहनती थे। वह कठिन से कठिन कार्य करने से भी नहीं घबराते थे। काम करते समय उन्हें इस बात की परवाह भी नहीं होती थी कि उन्होंने खाना खाया है अथवा नहीं। एक बार उनका काम छूट गया और उनकी आर्थिक स्थिति बेहद खराब हो गई। अनेक प्रयासों के बाद भी उन्हें कहीं काम न मिला। लेकिन किसी तरह पेट तो भरना ही था। तीन-चार दिन उन्हें भूखे रहते हुए हो गए। भूख से व्याकुल एरिक हौफर कुछ काम पाने की आस में घूम रहे थे। वह एक होटल वाले के पास गए। होटल वाला उन्हें पहचान गया। वह उनके लेखन से परिचित था। उसने उनके अनेक लेख पढ़े थे और उनका प्रशंसक भी था। उसने उनसे बड़े प्रेम से पूछा कि वह भोजन में क्या लेंगे? एरिक हौफर ने सहज होते हुए कहा, 'मैं भूखा तो हूं और भोजन भी करना चाहता हूं लेकिन उसके लिए मेरी एक शर्त हैं।' यह सुनकर होटल मालिक बोले, 'बताइए, मैं आपकी शर्त मानने के लिए तैयार हूं।' हौफर बोले, भोजन के बदले आप मुझसे कुछ काम अवश्य करवाएंगे। मैं नि:शुल्क भोजन नहीं करूंगा और इस समय मेरे पास पैसे नहीं हैं। इसलिए पैसे के बदले आप मेरी सेवा ले सकते हैं। होटल मालिक यह सुनकर हैरत में पड़ गया पर वह क्या करता। वह पहले ही स्वीकार कर चुका था कि वह उनकी शर्त मानेगा। उसने उनकी बात का सम्मान किया। उसने हौफर को भरफेट खाना खिलाया। उसके बाद हौफर ने उस होटल में अन्य वेटरों की तरह कुछ देर तक मन लगाकर काम किया। इसके बदले वह होटल मालिक के प्रति आभार व्यक्त करके वहां से निकले। यह देखकर होटल मालिक भी एरिक हौफर के स्वाभिमान का कायल हो गया।

अपने विचारों पर ध्यान दो,
वही शब्द बनते हैं।
अपने शब्दों पर ध्यान दो,
वही कर्म बनते हैं।
अपने कर्मों पर ध्यान दो,
वही आदतें बनती हैं।
अपनी आदतों पर ध्यान दो,
वही चरित्र बनता है।
अपने चरित्र पर ध्यान दो,
वही तुम्हारा भाग्य बनता है।

पत्र-दर्पण

टंकारा का सचिन

वर्तमान में भारत माता के दो पुत्रों ने खेल जगत् तथा आर्य संस्कृति के प्रतिष्ठापन में अनुपम सेवा प्रदान की है। यह भी कितनी मनोहारी बात है कि दोनों के नाम तीन अक्षरों से (सत्यम्-शिवम्-सुन्दरम्) सुवासित हैं। एक को ''सचिन'' तेन्दुलकर कहते हैं। दूसरे को ''अजय'' सहगल नाम से अभिहित करते हैं। एक क्रिकेट टैस्ट का 200वां मैच खेल रहे हैं। एक ने ''टंकारा पत्रिका'' के 200 सम्पादकीय लिखकर पत्रिका की चारूता को चित्रित किया है। यह उनकी अजस्त्र ध्रुव तपस्या का मधुमय परिणाम है।

श्री अजय सहगल घर, बाहर अपनी मातृभाषा पंजाबी का प्रयोग करते हैं, पुन: आप जिस प्रतिष्ठित संस्था में कार्यरत हैं, वहां अंग्रेजी भाषा का वर्चस्व है। दैनिक जीवन में सदा बड़ों से हिन्दी व संस्कृत की सुगन्ध उन्हें मिलती है। श्री सहगल का परिष्कृत सम्पादन पाठक के हृदय और बुद्धि को प्रभावित करता है। माननीय श्री क्षितीश जी वेदालंकार व पूज्य श्रीयुत् अशोक जी ने अजय को अपना पुत्र मानकर सरस्वती की सुमेधा से सज्जित किया है। उन दोनों के परिपूर्ण मार्गदर्शन व प्रत्यक्ष सहयोग से टंकारावाले श्री अजय का सम्पादकीय वात्सल्य, कर्मठता और विशिष्ट ज्ञान की मूर्ति से गठित है। हृदयग्राही है। सहगल जी की सरल, सहज, सम्यक पंक्तियों में जादू सा प्रभाव दर्शित है। थोड़ा समय ही बीता है पर श्री अजय ने कहीं पढ़ा था

'दक्ष उत्थान सम्पन्न: स्वयंकारी सदा भवेत्।' सदा दक्ष (कुशल) कर्मशील और परिश्रमी बनो। कवि कालिदास ने श्री अजय को एक पंक्ति पढ़ाई। **'अव्याक्षेपो भविष्यन्त्या कार्यसिद्धेहि लक्षणम्''** (रघुवंश 10.6।) अपने कार्य में कभी ढील, देरी न करो, कार्य की सफलता तुम्हारे द्वार पर होगी। श्री अजय ने बहुविध परिश्रम किया है। सहगल जी की पंक्तियाँ मानव मन तथा बुद्धि की ऊंचाइयों तक जा पहुंचे ताकि हम सस्वर कह सके ''तन्मे मन: शिव संकल्पमस्तु'' मेरा अन्त करण भद्रता से आपूरित हो, संकल्पमय हो।

त.शि.क.कण्णन

महामन्त्री तमिल प्रदेश हिन्दी संस्थान, चेन्नई मो. 09841094455

200वें अंक पर बधाई

प्रिय अजय,

टंकारा समाचार का 200वां अंक प्राप्त हुआ। इस भव्य और ऐतिहासिक अंक के लिए हार्दिक बधाई। टंकारा समाचार के माध्यम से पाठकों को बहुत ही उच्च कोटि की सामग्री उपलब्ध हो रही है और 200वां अंक तो बहुत ही ज्यादा आकर्षक हो गया है। ऋषि जन्म भूमि की प्रचार सामग्री का लोकार्पण अत्यन्त आकर्षक रूप से प्रकाशित हुआ है।

टंकारा समाचार की इस प्रचार सामग्री का निर्माण में आपकी कलात्मक दूरदर्शिता विशेष रूप से उभर कर सामने आई है। विद्वानों के लेख, देश-विदेश की आर्य समाजों की गतिविधियों के समाचार विशेष रूप से आर्य समाज (अनारकली) के 89वें वार्षिकोत्सव की झलकियों ने इस अंक को अत्यन्त संग्रहणीय बना दिया है। ईश्वर से प्रार्थना है कि आपका यह अभिनिवेश दिनों दिन और निखरता जाए और आर्य समाज को इसका पूर्ण लाभ मिले। पुन: एक बार बधाई एवं शुभकामनाएं।

एस. के. शर्मा

महामन्त्री आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, डायरेक्टर डी.ए.वी. पब्लिकेशन

लक्ष्य तक पहुंचने में सफल रहो

बेटे अजय,

आज मैं दोपहर को घर लौटी तो आते ही सर्वप्रथम टंकारा समाचार पर नजर पड़ी तो मन अति प्रसन्न हो गया, सारी थकान मिट गई। अपनी आदत के अनुसार जल्दी-जल्दी सम्पादकीय निकाल, किन्तु इस बार टंकारा समाचार का इतिहास पढ़ा जो मन की गहराइयों तक छू गया। सर्वप्रथम मैं टंकारा समाचार के 200वें अंक के प्रकाशित होने पर आपको हार्दिक बधाई देती हूं।

बेटे पढ़कर मुझे कैसा लगा या आपके लिए मेरे मन में क्या भाव उत्पन्न हुये, बताने के लिए मुझे शब्द नहीं मिल रहे। बस ईश्वर से प्रार्थना करती हूं कि वह आपको दीर्घायु दे, शक्ति दे और लक्ष्य तक पहुंचने में सफल करे।

आपका सफल सम्पादन ही इस पत्रिका को चार चांद लगाये हुए है, महीने के शुरु होते ही इंतजार रहता है पत्रिका का। बार-बार पढ़ कर भी जी नहीं भरता। आपकी समर्पित भावना ही ऋषि जन्म भूमि को और टंकारा समाचार को दिन प्रतिदिन उन्नत कर रही है। टंकारा समाचार के माध्यम टंकारा जन्मभूमि को एक नई पहचान मिली है। आज से 15-20 वर्ष पूर्व तक टंकारा जन्मभूमि का नाम सुना अवश्य था लेकिन आर्यों के इस तीर्थधाम के प्रति आकर्षण में इस पत्रिका का बहुत महत्वपूर्ण योगदान है। अत: बेटे अजय टंकारा वाले को मेरे हार्दिक आशीर्वाद और शुभकामनाएं।

राज लूथरा, टंकारा श्री

समाचार पत्र से टंकारा का आकर्षण बढ़ा

बन्धुवर अजय जी,

'टंकारा समाचार' ने 200 अंक का सफर तय कर लिया-हार्दिक बधाई। इस पूरे सफर में यह आपकी अथक मेहनत का ही फल है कि आज ऋषि भक्त टंकारा को पर्याप्त महत्व देने लगे हैं। ऋषि बोधोत्सव पर हर वर्ष बढ़ती भक्तों की संख्या इस बात का प्रमाण है। इस प्रपत्र के सशक्त माध्यम से पाठकों तक ये संदेश तो पहुंच चुका है कि जो पौधा स्वामी जी ने लगाया था अब वह वट वृक्ष का रूप धारण कर चुका है। उनका तप सफल हो रहा है। देश में अंधविश्वास व सामाजिक बुराइयों का अन्त होगा।

पत्रिका का रूप रंग, साज सज्जा बहुत ही सुन्दर है। भाषा सरल व संकलन अति उत्तम है। इसमें दी गई सामग्री प्रेरणादायक और आर्यो को जागृत करने में सक्षम है। लोक कल्याण हेतु इस पत्रिका का सुचारू प्रकाशन समाज के लिए अनुपम भेंट है।

टंकारा समाचार के प्रयास से अधिक से अधिक आर्य टंकारा के साथ जुड़े। जन्म भूमि आकर्षक बने। दिन दूनी, रात चौगुनी उन्नति करें। आने वाले समय में टंकारा आर्य गतिविधियों का मुख्य केन्द्र बने। ऐसी कामना करता हूँ।

प्रभु आप पर अपनी असीम कृपा बनाए रखें।

योगेश मुंजाल

मैनेजिंग डायरेक्टर मुंजाल शोवा लिमिटेड, गुड़गांव

अंग्रेजी शिक्षा वाले हिन्दी सम्पादक

बेटे अजय,

तुम्हें अजय टंकारावाला या केवल टंकारावाला से सम्बोधित करुं का मन्थन करते हुए बेटा शब्द मुझे उपरोक्त विशलेषणों से अधिक उपयुक्त लगा। लगभग आपके बाल्यकाल से ही आपके पिता से मेरे सम्बन्ध रहें और सदर बाजार बस्ती हरफूल सिंह, दिल्ली से ही आपके घर में आना जाना रहा। आप एक अंग्रेजी माध्यम स्कूल से पढ़े हैं इसकी मुझे जानकारी है लेकिन किस तरह से अपने आपको हिन्दी के सम्पादक के रूप में ढाल लिया, यह एक सराहनीय विषय है। स्व. आदरणीय क्षितिश वेदालंकार जी के सहायक के रूप में आर्य जगत साप्ताहिक में आपने जो योगदान दिया शायद उसी का परिणाम है कि आप आज आर्य समाज के एक प्रमुख मासिक पत्र के सम्पादक के रूप में उभरकर आर्य जगत में प्रसिद्ध हैं।

मैं यहां अपने बड़े भाई आपके पिता श्री रामनाथ सहगल जी को साधुवाद देना चाहूंगा कि जिन्होंने बहुत कुशलता से आपको संस्कारित किया और आर्य समाज के प्रति आपको समर्पित होने की प्रेरणा दी। जिसे आपने भलीभांति शिरोधार्य करते हुए पिता के आज्ञा का पालन किया। मुझे आज इस बात का गर्व होता है मेरा आपके परिवार से बहुत निजी सम्बन्ध रहा है।

टंकारा समाचार की एक बड़ी विशेषता यह रही है कि लगभग 17 वर्षों में एक भी अंक अप्रकाशित नहीं रहा। इसे पुरे परिवार की पत्रिका बनाने में आपका अनुपम योगदान है। इसकी आकर्षक छपाई एवं साज-सज्जा में इसके प्रकाशक अभी तक वहीं है तो राकेश भार्गव के योगदान को भी नकारा नहीं जा सकता। बहुत से आशीर्वादों के साथ।

राम सिंह शर्मा, इन्द्रप्रस्थ एस्टेट, नई दिल्ली

ऋषि के विचारों का ध्वजवाहक टंकारा समाचार

श्रीमान् टंकारावाला

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि नवम्बर 2013 के अंक के साथ ही मासिक टंकारा समाचार पत्र का 200वां अंक आपके सम्पादकीय काल में प्रकाशित होने जा रहा है। इसके लिए आपको बहुत-बहुत बधाइयाँ और धन्यवाद।

किसी भी मासिक समाचार पत्र का 200 वां अंक प्रकाशित होना यह प्रदर्शित करता है कि पाठकों के मन में उसके प्रति कितना अधिक स्नेह एवं विश्वास है। यह सम्पादक के रूप में आप द्वारा किये गये टीमवर्क का ही उत्कृष्ट परिणाम है।

मार्च 1997 में आपके द्वारा टंकारा समाचार के प्रकाशन के साथ ही जिस पौधे का रोपण किया गया। आज यही पत्र आर्य जगत का सर्वाधिक संख्या में प्रकाशित होने वाले मासिक समाचार पत्र बन विशाल वटवृक्ष के रूप में सुधी आर्यजनों को सुमधुर वैदिक विचार रूपी फल का रसास्वादन करा रहा है। माली द्वारा रोपे गये पौधे का विशाल वृक्ष बन जाने पर उस माली को जो संतोष और प्रसन्नता होती है उसका वर्णन शब्दों द्वारा सम्भव नहीं है।

टंकारा समाचार का सफलता की इन ऊंचाई को छूना, ये सब संभव हुआ है आपकी दृढ़ इच्छा शक्ति, ऋषि के मिशन के प्रति अनन्य निष्ठा व बिना किसी कष्ट का अनुभव किए अनवरत रूप से किये गये अथक परिश्रम के कारण। इसके लिए आपको कोटिश: साधुवाद।

आज आर्य जगत में अनेक समाचार पत्र प्रकाशित हो रहे हैं परन्तु जिस ढंग से आपके द्वारा लेखों तथा समाचारों का चयन किया जाता है, उसने टंकारा समाचार को विशिष्ट स्थान प्रदान किया है। टंकारा समाचार, ऋषि के सिद्धांतों और विचारों का एक सच्चा पथप्रदर्शक बनकर उभरा है।

यह आर्यत्व के मार्ग का दिग्दर्शक है। इसके माध्यम से आर्य समाज की विचार बगिया निरन्तर पुष्पित तथा पल्लवित हो रही हैं।

आपके सम्पादकत्व में टंकारा समाचार केवल मात्र टंकारा ट्रस्ट के कार्यों का ज्ञापन न होकर सम्पूर्ण आर्य जगत की घटनाओं व समाचारों का मुखर प्रवक्ता बनकर उभरा है। टंकारा समाचार के साथ पाठकों का एक अलग ही आध्यात्मिक रिश्ता है। ऋषि की जन्मभूमि से प्रकाशित होने के कारण प्रत्येक आर्य इसका श्रद्धा से वाचन कर ऐसा अनुभव करता है जैसे वह साक्षात् टंकारा पहुंच गया है और उस पुण्यधाम के दर्शन कर रहा है। टंकारा समाचार को आध्यात्मिकता के इस धरातल तक पहुंचाकर अजय टंकारावाला जी आप तो ऋषि ऋण से उऋण से हो गये हैं।

किसी भी मासिक पत्र का सम्पादक के अपने सम्पादकीय काल में 200 वें अंक की लम्बी छलांग लगाना कोई मामूली बात नहीं होती है। इसके पीछे होता है उसका वह दीर्घकालीन ज्ञानानुभव, जो गहन परिश्रम से आता है। यह तब संभव होता है जब कोई सम्पादक समाचार चयन में कुशल, निष्पक्ष एवं पत्रकारिता का मर्मज्ञ हो। आज के युग में प्राय: व्यक्ति सफलता का सम्पूर्ण श्रेय स्वंय लेता दिखाई देता है किन्तु आपने टंकारा समाचार की सफलता का श्रेय उन सभी विद्वानों एवं लेखकों को प्रदान किया जिनके लेख टंकारा समाचार पत्र में समय-समय पर प्रकाशित होते रहे हैं। ये आपके बड़प्पन का दिग्दर्शन है। आपके सम्पादन की यह विशेषता रही है कि आपके टंकारा समाचार में आर्य जगत के ख्यातनाम विद्वानों एवं लेखकों के अतिरिक्त नवोदित लेखकों को भी अवसर देकर उन्हें प्रतिष्ठापित करने का प्रयास किया है। टंकारा समाचार में आपके मर्मस्पर्शी सम्पादकीय आलेख से भान होता है कि भाषा पर आपकी किस प्रकार असाधारण पकड़ है। आपके भावावेशी शब्द सीधे पाठकों के हृदय को छू जाते हैं। सम्पादकीय की यह गहनता जो टंकारा समाचार में परिलक्षित होती है जो कि आपको स्व. श्री क्षितीश वेदांलकार जी और स्व. श्री अशोक कौशिक जी से वरदान के रूप में प्राप्त हुई है अन्य पत्रों से इसे पृथक् बनाये रखती है।

टंकारा समाचार के समय-समय पर प्रकाशित होने वाले विशेषांक भी इसकी एक अलग ही विशेषता है। बोधांक विशेषांकों की उत्कृष्ट छपाई, आकर्षक साज सज्जा ने हमेशा पाठक के मन को आकर्षित किया है। परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना है कि वह आपको इसी प्रकार सामर्थ्य और स्वास्थ्य प्रदान करता रहे, जिससे कि आप के सम्पादकत्व में टंकारा समाचार पत्र इसी प्रकार सफलता फूलता रहे और सफलता की नित नई ऊंचाई को छूता जाए, जिससे जन-जन तक ऋषि के विचारों का प्रवाह होता रहे।

अर्जुन देव चड्डा

प्रधान जिला आर्य प्रतिनिधी सभा कोटा, मो. 09414187428

समाचार दर्पण

130वां महर्षि दयानन्द निर्माणोत्सव सम्पन्न

महर्षि दयानन्द वैचारिक क्रांति के अग्रदूत थे-महाशय धर्मपाल

आर्य समाज मन्दिर सुन्दर, आकर्षक और स्वच्छ हों- आनन्द चौहान

मंच पर श्री धर्मपाल आर्य, उपप्रधान, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य द्वारा श्री आनन्द चौहान, डायरेक्टर एमेटी शिक्षण संस्थान एवम् ए.के.सी. ग्रुफ ऑफ इंडस्ट्रीज, महाशय धर्मपाल जी, प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा एवम् श्रीमती मृदुला चौहान का फूल मालाओं द्वारा स्वागत। साथ श्रीमती माता प्रेमलता शास्त्री।

महान सुधारक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वेदों से शिक्षा लेकर संसार को नई दिशा दी। उन्होंने अंधविश्वास निवारण के साथ देश की आजादी के लिए भी सतत् संघर्ष किया। ये उद्गार महाशय धर्मपाल, सभा प्रधान 130वें महर्षि दयानन्द निमाणोत्सव पर रामलीला मैदान नई दिल्ली में आयोजित कार्यक्रम में कहे। प्रो. धर्मवीर (अजमेर) ने आज संस्कारों व संस्कृति रक्षा पर चिन्ता जलाई और बुद्धिजीवियों को आगे आने का आह्वान किया। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री विनय आर्य ने कहा-100 वर्ष पहले 'युगान्तर आश्रम' सान फ्रांसिस्को अमेरिका से देशभक्त लाला लाजपत राय, लाला हरदयाल, भाई परमानन्द, सोहन सिंह भखना, करतार सिंह सराबा, आजादी व देश सुधार के लिए 'गदर' अखबार निकाला था, गदर शताब्दी के उपलक्ष्य में यहां पधारे प्रवासी प्रचारक प्रवीण सिंह (न्यूजीलैंड) भुवनेश खोसला (अमेरिका) का स्वागत हुआ। वैदिक विद्वान धनञ्जय सिंह, पत्रकार-चन्द्रमोहन आर्य, कार्यकर्ता सुरेन्द्र चौधरी का शाल व पुष्पमाला से सार्वजनिक अभिनन्दन हुआ।

अर्जुनदेव चड्ढा भोपाल में सम्मानित

राष्ट्रीय पंजाबी महासंघ के मध्यप्रदेश की राजधारी भोपाल में सम्पन्न हुए दो दिवसीय राष्ट्रीय अधिवेशन में पंजाबी जन सेवा समिति कोटा के अध्यक्ष एवं राजस्थान के जाने माने समाजसेवी अर्जुनदेव चड्ढा को उनकी उत्कृष्ट सेवाओं के लिए प्रशस्ति पत्र, स्मृति चिन्ह एवं बुके देकर सम्मानित किया।

श्री सहगल जी का विशेष सम्मान

130वें महर्षि दयानन्द निर्माणोत्सव के अवसर पर दिल्ली की समस्त आर्य समाजों की ओर से आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान महाशय धर्मपाल जी द्वारा श्री रामनाथ सहगल, मन्त्री, टंकारा ट्रस्ट एवं उपाध्यक्ष डी.ए.वी. प्रबन्धकर्त्री समिति का विशेष सम्मान किया गया। इस अवसर पर सहगल जी ने अपने पुराने संस्मरण भी बताये।

नि:शुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल पुण्डरी के प्रांगण में आर्य युवा समाज इकाई की ओर से नि:शुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम स्कूल की चेयर पर्सन श्रीमती सुषमा गुप्ता तथा स्थानीय प्रबंधक समिति द्वारा दीप प्रज्वलित कर शिविर का शुभारंभ किया गया। शिविर में चिकित्सकों की टीम में डॉ. दीपक गर्ग (नेत्र रोग विशेषज्ञ) डॉ. अनुपम गर्ग (स्त्री रोग विशेषज्ञ) डॉ. कुलजीत कुमार (हड्डी रोग विशेषज्ञ) डॉ. राजबीर सिंह चौधरी (सामान्य रोग विशेषज्ञ) ने अपनी सेवाएं देकर लगभग 475 रोगियों की जांच तथा नि:शुल्क दवाइयां बांटी गई। स्कूल की प्रधानाचार्या श्रीमती साधना बख्शी ने इस अवसर पर आए हुए सभी चिकित्सकों एवं मेहमानों का हार्दिक स्वागत किया।

गंगा प्रसाद उपाध्याय पुरस्कार घोषित

गंगा प्रसाद उपाध्याय की स्मृति में 2012-13 का गंगा प्रसाद उपाध्याय पुरस्कार इस वर्ष प्रख्यात वैदिक विद्वान डॉ. रूप किशोर शास्त्री, सचिव महर्षि सन्दीपनिवेद विद्या प्रतिष्ठान् उज्जैन को उनकी महत्वूपर्ण कृति 'दयानन्द निरूक्ति व्युत्पत्ति कोष तथा डॉ. रमेश दत्त शास्त्री फैजाबाद को उनकी महत्वपूर्ण कृति महर्षि दयानन्द का दार्शनिक चिन्तन' पर प्रयास किया जायेगा।

चौराहे पर बेचे ''सत्यार्थ प्रकाश''

महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत अमर ग्रन्थ ''सत्यार्थ प्रकाश'' कोटा महानगर के भीड़ भरे चौराहे बाजार में आर्य समाज जिला सभा कोटा के पदाधिकारियों ने 500 पृष्ठों का 50/-रूपये कीमत का सत्यार्थ प्रकाश मात्र रू. 10/- में आवाज लगा-लगाकर बेचा।

आर्य समाज जिला सभा के प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा माइक से सत्यार्थ प्रकाश की विशेषताएं बता रहे थे। ईश्वर का सच्चा स्वरूप ईश्वर के नामों की व्याख्या, समस्त मत मतान्तरों की विवेचना, आश्रम व्यवस्था आदि सत्यार्थ प्रकाश में है। इससे प्रभावित होकर मुस्लिम, सिख, छात्र, महिलाएं लाइन लगाकर सत्यार्थ प्रकाश खरीद रहे थे।

इस अवसर पर आर्य विज्ञान नगर के प्रधान जे.एस. दुबे, आर्य समाज रेलवे कॉलोनी के प्रधान हरिदत्त शर्मा, आर्य समाज रामपुरा के प्रधान कैलाश बाहेती, आर्य समाज गायत्री विहार के प्रधान अरविन्द पाण्डेय, आर्य समाज तलवण्डी के रामप्रसाद याज्ञिक, चन्द्रमोहन कुशवाह उपस्थित जनसमुदाय को सत्यार्थ प्रकाश की विशेषता बता रहे थे। आमजनों ने आर्य समाज के इस पवित्र कार्य की प्रशंसा की।

डॉ. धर्मेन्द्र कुमार सम्मानित

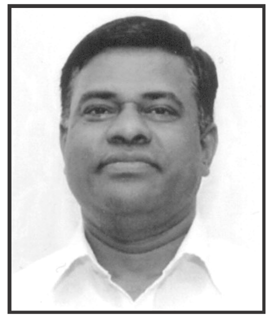

अखिल भारतीय विद्वत परिषद् वाराणसी की ओर से दिल्ली संस्कृत अकादमी (दिल्ली सरकार) के कर्मठ यशस्वी सचिव डॉ. धर्मेन्द्र कुमार को 'संस्कृत विद्यामार्तण्ड' की उपाधि से सम्मानित किया गया। यह सम्मान प्रतिवर्ष संस्कृत भाषा के प्रचार-प्रसार में संलग्न विशिष्ट विद्वज्जनों को प्रदान किया जाता है। डॉ. धर्मेन्द्र कुमार शास्त्री ने पिछले एक वर्ष में दिल्ली संस्कृत अकादमी के माध्यम से अनेकों कार्यक्रम सम्पन्न किए हैं। दिल्ली के सभी विद्यालयों के छात्रों के लिए अनेक प्रतियोगिताओं जैसे-श्लोक अन्त्याक्षरी, संस्कृतभाषण, संस्कृत वाद-विवाद नाटक इत्यादि का आयोजन किया गया, जिसमें लगभग 10000 छात्र-छात्राओं ने बढ़कर भाग लिया। इसी प्रकार दिल्ली स्थित सभी महाविद्यालयों के स्तर पर भी अनेक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

एमिटी विश्वविद्यालय नोएडा के संयुक्त तत्त्वावधान में एक अखिल भारतीय युवा संस्कृत सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें भारत के कोने-कोने से महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में पढ़ने वाले शोधार्थियों ने भाग लिया। अन्तराष्ट्रीय संस्कृत सम्मेलन का आयोजन विज्ञान भवन में आयोजित किया गया, जिसमें देश-विदेश के लगभग 2000 आचार्यों ने भिन्न-भिन्न विषयों को लेकर अपने शोधपत्र प्रस्तुत किए। इस प्रकार अनेक सांस्कृतिक-शैक्षणिक, सामाजिक गतिविधियों के माध्यम से संस्कृत भाषा को जन-जन तक पहुँचाने का कार्यभार डॉ. शास्त्री कुशलतापूर्वक निभा रहे हैं।

निर्धनों को कपड़े बांटे

आर्य समाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चढ्ढा की अगुवाई में दादाबाड़ी तिराहे के पास स्थित झुग्गी झोपडियों के रहवासी निर्धन परिवारों के बच्चों को कपड़े, महिलाओं को साड़ियां, पुरुषों को पेन्ट-शर्ट जिला सभा की ओर से दिए गए। सभी को बिस्कुट के पैकेट भी बांटे गए।

चतुर्वेद शतकम् यज्ञ सम्पन्न

महिला आर्य समाज मानसरोवर जयपुर ने 19वें स्थापना दिवस समारोह पर चतुर्वेद शतकम् यज्ञ की पूर्णाहुति की। चार दिवसीय यज्ञ के ब्रह्मा डॉ. कृष्ण पाल सिंह एवं वेदपाठी श्रीमती श्रुति शास्त्री तथा दीपक आर्य रहे। देहरादून के प्रख्यात भजनोपदेशक पंडित सत्यपाल 'सरल' के भजनों ने माधुर्य बिखेरा महिला आर्य समाज की प्रधाना श्रीमती सरोज कालरा ने विद्वान, आचार्यो को सम्मानित किया।

अखिल भारतीय संस्कृत व्याकरण प्रतियोगिता

सभी सज्जनों को सूचित किया जाता है कि प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी **श्रीमद्दयानन्द आर्ष गुरुकुल एवं श्री रामकृष्ण गौशाला खेड़ा खुर्द दिल्ली-82** में अखिल भारतीय अन्तर गुरुकुलीय संस्कृत व्याकरण प्रतियोगिता (अष्टाध्यायी, कण्ठस्थीकरण, प्रथमावृत्ति, धातुवृत्ति एवं काशिका) आगामी 27 व 28 दिसम्बर 2013 को आयोजित की जा रही है। इच्छुक छात्र सम्पर्क करें। विस्तृत नियमावली शीघ्र भेजी जाएगी।

राष्ट्र-वन्दना के गायक

आधुनिक भारत के सांस्कृतिक पुनर्जागरण और राष्ट्रीय वंदना में आर्य समाज के प्रर्वतक महर्षि दयानन्द सरस्वती की बड़ी भूमिका रही है। परन्तु स्वतन्त्र होने के बाद आर्य समाज की पहचान कुछ बदल गई है। अब इसे केवल एक सामाजिक और सांस्कृतिक संगठन माना जाता है। समय-समय पर इस स्थिति को बदलने के प्रयत्न होते रहे हैं। भारतीय जनसंघ के निर्माण में आर्य समाज का योगदान उसका एक उदाहरण है। परन्तु जनसंघ के संस्थापक डाक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी की एक बन्दी के रूप में कश्मीर में 1953 में हुई रहस्यमय मृत्यु के बाद आर्य समाज ने जनसंघ से हाथ खींचना शुरू कर दिया और उस पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का दबाव बढ़ने लगा। इस स्थिति में 1967 के आसपास बदलाव आया। इस बदलाव में जिन आर्य बन्धुओं ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की उनमें प्रकाशवीर शास्त्री प्रमुख थे।

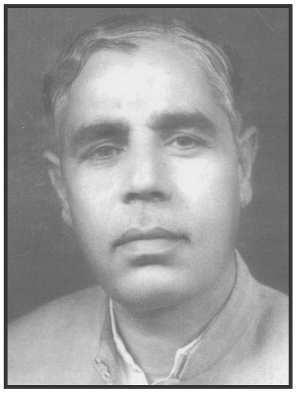

स्व. पं. प्रकाशवीर शास्त्री

प्रकाशवीर शास्त्री गुरुकुल के स्नातक थे और आर्य समाज के ओजस्वी प्रचारक थे। उनके भाषणों में राजनीति की भी पुट होती थी। इसलिये उन्हें सुनने के लिये आर्य समाजों के अन्दर और बाहर के बहुत लोग इकट्ठे होते थे। कुछ लोग जो मेरी आर्य समाज की पृष्ठभूमि को जानते हैं यदा कदा प्रकाशवीर को जनसंघ में लाने की बात कहते रहते थे। मेरा उनसे कोई प्रत्यक्ष परिचय नहीं था। 1965 में एक दिन अकस्मात मेरी उनसे भेंट हो गई। मैं मुरादाबाद जा रहा था। वहाँ गाड़ी से उतरते हुए उनसे परिचय हुआ और परिचय मित्रता में बदल गया। उसके बाद घनिष्ठता बढ़ती ही गई और उन्होंने आर्य समाज के साथ जनसंघ की गतिविधियों में भी रुचि लेनी शुरू कर दी।

1965 में जनसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष चुने जाने के बाद मैंने इस के जनाधार को व्यापक बनाने के लिये आर्य समाज के बन्धुओं को जनसंघ में लाने का विशेष प्रयत्न किया और 1967 के लोग सभा के चुनाव के लिये उनमें से कुछ को जनसंघ का टिकट दिया और कुछ को जनसंघ का समर्थन देने का फैसला किया। उनमें प्रकाशवीर शास्त्री भी थे। मैं चाहता था कि वे लाला राम गोपाल शालवाले की तरह जनसंघ के टिकट पर चुनाव लड़ें। परन्तु वे जनसंघ के समर्थन से स्वतन्त्र उम्मीदवार के रूप में चुनाव लड़ना चाहते थे। उनका तर्क था कि इस रूप में उन्हें कांग्रेस से जुड़े हुए आर्य समाजियों का भी भरपूर समर्थन मिल सकेगा। वे लोकसभा की गुडगांवा क्षेत्र से खड़े हुए। उनके चुनाव अभियान का उद्घाटन मैंने किया और उनका चुनाव प्रचार भी किया। यहीं मेरी उनके प्रिय मित्र रामनाथ सहगल से मुलाकात हुई, जिन्होंने उनके चुनाव प्रचार का दायित्व अपने ऊपर लिया हुआ था। शास्त्री जी अच्छे मतों से जीते थे।

चौथी लोकसभा में जनसंघ के 35 सदस्य और उनकी सहयोगी पार्टी, स्वतन्त्र पार्टी, के 45 सदस्य बन गये। लगभग 50 निर्दलीय सदस्य विशेष रूप से जनसंघ के समर्थन से जीते थे। उनमें प्रकाशवीर शास्त्री, शिव कुमार शास्त्री और जगदेव सिद्धांती प्रमुख थे।

प्रकाशवीर जी ने शीघ्र ही लोकसभा में अपना स्थान बना लिया उस समय संसद के सदस्यों का और संसद में होने वाली बहस का स्तर काफी ऊँचा था। प्रकाशवीर का हिन्दी पर अधिकार तो था ही उनकी भाषा में एक विशेष ओज और शब्दों पर पकड़ भी थी। वे गम्भीर से गम्भीर विषयों पर भी हिन्दी में बढ़े अच्छे ढंग से अपने विचार प्रकट करते थे। फलस्वरूप शीघ्र ही उनकी संसद में हिन्दी में बोलने वाले सर्वश्रेष्ठ सांसद के रूप में धाक बैठ गई। उनके भाषणों में प्रखर राष्ट्रीयता की भावना झलकती थी। कई बार मुझे लगता था कि वे जनसंघ का दृष्टिकोण जनसंघ के अनेक साथियों से बेहतर रूप से रखते थे।

एक दिन मैंने प्रकाशवीर जी से कहा कि वे औपचारिक रूप से जनसंघ के सदस्य बन जायें तो मैं उन्हें जनसंघ का एक राष्ट्रीय मंत्री मनोनीत कर दूंगा। मैंने उन्हें यह भी कहा कि उनके जनसंघ के संगठन से जुड़ने से जनसंघ को भी लाभ होगा और आर्य समाज को भी। यह दोनों मिल कर देश की राजनीति विशुद्ध राष्ट्रवादी और यथार्थवादी दिशा दे पायेंगे। उन्होंने मेरी पेशकश के लिए धन्यवाद किया परन्तु उसे स्वीकार नहीं किया।

प्रकाशवीर भले ही जनसंघ के सदस्य नहीं थे परन्तु वे आखरी साँस तक जनसंघ की विचारधारा के प्रबल प्रवक्ता और सम्बल बने रहे। स्वतन्त्र सदस्य होने के नाते वे बहुत बार कांग्रेस और अन्य दलों के सांसदों को बेहतर प्रभावित करते रहे थे। वे आयु में मेरे से छोटे थे और उनका स्वास्थ्य काफी उत्तम था। कई बार आर्य समाज के कार्यक्रमों पर हम इकट्ठे जाते थे। तब आर्य समाज के सम्बन्ध में भी हमारे बीच गहन विचार होता था। आर्य समाज और मुझे उनसे बहुत ही आशा थी। परन्तु विधि का विधान कुछ और ही कहता था। एक रेल दुर्घटना में उनकी अकाल मृत्यु हो गई।

गत 20 वर्षों में भारत ने आर्थिक क्षेत्र में कुछ प्रगति की है परन्तु इसकी राजनीति, इस के सांसदों तथा संसद में बहस का स्तर लगातार गिरता जा रहा है। जनसंघ के कर्णधारों ने सत्ता प्राप्ति के छोटे रास्ते की तलाश में भाजपा के नाम पर कांग्रेस के मार्ग पर चलना शुरू कर दिया। वोट बैंक की राजनीति के कारण साम्प्रदायिकता, जातिवाद और अलगाववाद को लगातार बढ़ावा मिल रहा है, इतना ही नहीं छद्म सेकुलरवाद के नाम पर इस की वकालत सी होने लगी है। फलस्वरूप जिन तत्त्वों और जिन नीतियों के कारण 1947 में मातृ भूमि का विभाजन हुआ था और भयानक मार-काट हुई थी वही तत्त्व फिर सिर उठा रहे हैं। और मुस्लिम समाज और अधिक भयंकर रूप से फिर खड़ा हो गया है। इस का पाकिस्तान भरपूर लाभ उठा रहा है और खंडित भारत को भी अपनी तरह 'दारूल उल इस्लाम, बनाने के लिये प्रयत्नशील है। ऐसी स्थिति में पाकिस्तान के साथ निर्णायक युद्ध की सम्भावना दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है। इन हालात में प्रकाशवीर जी के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि राष्ट्रवाद की भावना को सबल बनाना और आर्य समाज को सजीव और सजग करना ही हो सकती है। **–बलराज मधोक, पूर्व सांसद**

टंकारा में ऋषि बोधोत्सव के लिए निमंत्रण

(26 फरवरी से 28 फरवरी, 2014)

मान्यवर/मान्या, सादर नमस्ते।

ऋषि जन्मभूमि, टंकारा में आगामी ऋषि बोधोत्सव (महाशिवरात्रि) का आयोजन समारोहपूर्वक किया जा रहा है। आप इस कार्यक्रम में परिवार एवं इष्ट-मित्रों सहित अधिक से अधिक संख्या में पधारने की कृपा करें। 21 फरवरी 2014 प्रात: को 1 मार्च 2014 प्रात: तक अपना बहुमूल्य समय इस कार्यक्रम के लिए रखें। आर्य समाज के विचारों के प्रति आपकी अटूट श्रद्धा, प्रेम, प्यार, उत्साह को देखकर अत्यन्त प्रसन्नता होती है। आपकी टंकारा यात्रा सुखद एवं मंगलमय हो, यही हमारी परमात्मा से प्रार्थना है। ध्यान रहे आप महर्षि दयानन्द की जन्मस्थली की यात्रा करने जा रहे हैं, आप अपने त्याग, सहयोग, उत्साह को इस काल में बनाये रखें। यात्रा रेल द्वारा होगी। इस बार हमने गांधीधाम भुज (कच्छ) की यात्रा करने का भी मन बनाया है। खान-पान, ठहरने का प्रबन्ध उचित करने का पूरा प्रयत्न होगा, फिर भी आपके मन के अनुकूल न हो, कहीं कमी का अनुभव हो तो चर्चा का विषय न बनायें।

वरिष्ठ नागरिक जिनकी आयु 60 वर्ष से ऊपर है, गाड़ी में रियायत लेने वाले मूल आयु प्रमाण-पत्र साथ रखें। टंकारा में मौसम थोड़ी गर्मी का होगा, लगभग यहाँ के अप्रैल-मई की तरह। अत: हल्का-फुल्का बिस्तर, पहनने के कपड़े एवं केवल दैनिक उपयोग की साम्रगी, पीने का पानी और दैनिक उपयोग में आने वाली दवाई साथ रखें। सामान उतना साथ लें जो आप स्वयं उठा सकें। अपने सामान की सुरक्षा स्वयं करें। कीमती सामान, धनराशि साथ न रखें। गर्म कपड़ों में आप स्वेटर, शॉल, ओढ़ने के लिए चद्दर साथ रखें।

आर्य समाज सम्बन्धी धार्मिक भजन बोलने वाले भाई-बहन भजनों की कापी साथ रखें।

कार्यक्रम

- ❑ दिनांक 21 फरवरी, 2014 (शुक्रवार) को आला हजरत (बरेली एक्सप्रैस) गाड़ी नं. 14311 द्वारा रवाना होंगे। यह गाड़ी पुरानी दिल्ली से 11:30 बजे चलकर सराय रोहिल्ला होती हुई दिल्ली कैण्ट 12:10 पर आती है। आप स्टेशन पर आधा घण्टा पहले पहुँचने की व्यवस्था करें। दोपहर का भोजन साथ लायें। रात्रि का भोजन गाड़ी में होगा।
- ❑ दिनांक 22 फरवरी, 2014 (शनिवार) को दोपहर 12 बजे तक गांधीधाम (भुज) पहुँच जायेंगे। दोपहर का भोजन गांधीधाम में होगा। भोजन तथा रहने की व्यवस्था वहाँ की आर्य समाज द्वारा होगी। [गांधीधाम (भुज) वह स्थान है जहाँ 26 जनवरी, 2001 को भयंकर भूकम्प आया था। गणतंत्र दिवस मनाते हुए सैंकड़ों लोगों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा था। सैंकड़ों बच्चे अनाथ हो गये थे। उन अनाथ बच्चों के खाने, कपड़ा, पढ़ाई आदि की सारी जिम्मेदारी आर्य समाज गांधीधाम ने ले रखी है।]
- ❑ दिनांक 23-24 फरवरी, 2014 (रविवार, सोमवार)- इन दो दिनों में वहां के महामन्त्री की सलाह से गांधीधाम, भुज तथा अन्य स्थानों का भ्रमण विशेष बस द्वारा होगा।
- ❑ दिनांक 25 फरवरी, 2014 (मंगलवार)-गांधीधाम में प्रात: नाश्ता लेकर बस द्वारा टंकारा के लिए रवाना होंगे।
- ❑ दिनांक 25 से 27 फरवरी, 2014 (मंगलवार, बुधवार, बृहस्पतिवार)- महर्षि दयानन्द की जन्मस्थली टंकारा में ऋषि बोधोत्सव बड़ी धूम-धाम में मनाया जायेगा। इस दौरान आवास तथा भोजन की व्यवस्था टंकारा ट्रस्ट की ओर से होगी।
- ❑ दिनांक 28 फरवरी, 2014 (शुक्रवार)-टंकारा में प्रात: नाश्ता करके टैक्सी द्वारा राजकोट स्टेशन के लिए रवाना होंगे। राजकोट से उत्तरांचल एक्सप्रैस (गाड़ी नं. 19565) द्वारा 12:20 बजे दोपहर को दिल्ली के लिए रवाना होंगे। दोपहर तथा रात्रि के भोजन आदि का प्रबन्ध गाड़ी में किया जायेगा।
- ❑ दिनांक 1 मार्च, 2014 (शनिवार)-ईश्वर का धन्यवाद करते हुए दिल्ली कैण्ट होते हुए प्रात: 10:30 बजे पुरानी दिल्ली पहुँच जायेंगे।

विशेष:- ध्यान रहे कि गांधीधाम तथा टंकारा में ठहरने के लिए पहले से प्रबन्ध करना होगा तथा रेलगाड़ी की बुकिंग भी पहले से करानी होगी, इसलिए अपने नाम सोच समझकर शीघ्रातिशीघ्र दे दें। अगर कोई भाई-बहन किसी कारणवश न जा सके तो कृपया जाने से 7 दिन पहले हमें अवश्य सूचना दे दें। कम-से-कम कटौती के बाद उसका पैसा लौटा दिया जायेगा।

अनुमानित व्यय:- II Sleeper : साधारण-2,800 रु.; वरिष्ठ नागरिक पुरुष-2,500 रु.; वरिष्ठ नागरिक महिला-2,400 रु.। 3-Tier AC: साधारण-4,400रु.; वरिष्ठ नागरिक पुरुष 3,500 रु.; वरिष्ठ नागरिक महिला-3,300 रु.। यह व्यय No-Profit No- Loss के आधार पर रखा गया है। इसमें खाने-पीने ठहरने, गाड़ी का किराया आदि सम्मिलित है। राशि कृपया 15 दिसम्बर, 2013 तक अवश्य निम्न व्यक्तियों के पास जमा करवा दें। रेलवे टिकट की बुकिंग में परेशानी को देखते हुए इच्छुक भाई-बहन अपनी राशि शीघ्रातिशीघ्र जमा करवा दें। हालात के अनुसार प्रोग्राम में थोड़ी-बहुत तब्दीली हो सकती है।

विशेष: दिल्ली कैण्ट स्टेशन पर सभी गाड़ियाँ रुकती हैं। वहीं से गाड़ी पकड़ सकते हैं और वहाँ उतर भी सकते है।

महेन्द्र प्रताप साहनी

C-4Fèk239 जनकपुरी, नई दिल्ली, मोबाइल न. 9311357493

ऊषा अरोड़ा/राम चन्द अरोड़ा

C-5Aèk216 जनकपुरी, नई दिल्ली, मोबाइन न. 9910650690, 011-25521814

शरीर का ध्यान रखना एक पत्ते को धोने जैसा है, जबकि मन का ध्यान रखना पेड़ की जड़ों में पानी डालने जैसा है।

❑❑❑

हम जीतने का उत्सव तभी मना सकते हैं
जब हम वास्तव में जीत गए हों।

❑❑❑

मन निरन्तर यात्रा करता रहता है। वह कभी थकता ही नहीं।
रोचकता के कमल की जड़ आशा के जल से जुड़ी हुई होती है।

शोक समाचार

आर्यसमाज जनकपुरी बी.ब्लॉक, जनकपुरी, नई दिल्ली के कर्मठ कार्यकर्त्ता एवं अन्तरंग सदस्य श्री वीरेन्द्र प्रसाद आर्य का निधन 27 अगस्त 2013 की प्रात: काल दुर्घटनाग्रस्त हो जाने के कारण असामयिक निधन हो गया। यज्ञ, योग एवं वैदिक सिद्धान्तों में उनकी अगाध श्रद्धा व निष्ठा थी। उनके निधन से उनके निजी परिवार व आर्यसमाज की जो क्षति हुई है, उसकी पूर्ति हो सकना अति कठिन है। टंकारा ट्रस्ट परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक संतृप्त परिजनों व इष्ट मित्रों को इस दारूण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पद्चिन्ह्नों पर चलने की प्रेरणा सभी को प्रदान करें।

डॉ. सच्चिदानन्द शास्त्री नहीं रहे

आर्य जगत के विद्वान, वरिष्ठ आर्य नेता, हैदराबाद सत्याग्रह के सैनानी, आर्यसमाज की सर्वोच्च शिरोमणि संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली की वर्षो तक मन्त्री के रूप में सेवा करने वाले डॉ. सच्चिदानन्द शास्त्री जी का दिनांक 30 अक्टूबर 2013 को मध्यरात्रि आर्यसमाज गणेशगंज लखनऊ में निधन हो गया। वे लगभग 90 वर्ष के थे। उनका अन्तिम संस्कार उनके पैतृक निवास ग्राम सुरसा, हरदोई में 31 अक्तूबर को पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित हैदराबाद सत्याग्रह स्मृति दिवस समारोह में डॉ. सच्चिदानन्द जी का विशेष सम्मान किया गया था। श्री शास्त्री जी के निधन से आर्यसमाज की अपूरणीय क्षति हुई है।

(पृष्ठ 1 का शेष)

व्यक्ति थे। वैदिक-धर्म की बलिवेदी पर तिल-तिल होकर जलने वाले पण्डित गुरुदत्त जैसे तपस्वी थे। अपना सर्वस्व न्यौछावर करने वाले अद्भुत प्रतिभा के धनी स्वामी दर्शनानन्द थे। धर्म पर बलिदान होने वाले पण्डित लेखराम, महाशय राजपाल जैसे अनेक वीर थे। वेदानन्द तीर्थ, चमूपति जैसे चिन्तक थे, पण्डित रामचन्द्र देहलवी और ठाकुर अमरसिंह जैसे मेधा के धनी शास्त्रार्थ महारथी थे। स्वामी श्रद्धानन्द जैसे अपना सर्वस्व स्वाहा करने वाले त्यागी थे। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अपना शरीर तो मानव-कल्याण एवं देश-हित में बलिदान किया ही मगर उससे पूर्व उन्होंने अपनी समस्त धन-सम्पदा अपने मिशन के लिए समर्पित कर दी थी। स्वामी जी महाराज एक ऐसे अद्भुत एवं बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे कि उनके स्मरण मात्र से ही हमारे भीतर ओजस्विता, कर्मठता और बलिदानी भावनाओं का संचार होने लगता है। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अपने तप और त्याग द्वारा संसार में ऐसे अद्भुत कार्य किए जिनके कारण उन्हें सदा-सर्वदा स्मरण किया जाता रहेगा।

– वैदिक वशिष्ठ आश्रम (महर्षि दयानन्द धाम), महादेव, सुन्दरनगर, जिला मण्डी (हि.प्र.)

टंकारा ट्रस्ट इंटरनेट पर
श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा
www.tankara.com पर उपलब्ध है

वैदिक वीरांगना दल

वैदिक वीरांगना दल, जयपुर के द्वारा वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए व दयानन्द के सपनों को पूरा करने के लिए अपने कार्यालय बी-123, मालवीय नगर, जयपुर पर अनेक तरह के वैदिक कार्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं जिसमें सुबह 6:30 से 7:30 तक योग, 8:30 से 9:00 बजे तक हवन और उसका प्रशिक्षण और सायं 4 से 5 बजे तक उपनिषद् अध्ययन, ध्यान व संध्या का आयोजन दैनिक किया जा रहा है तथा बीच-बीच में अनेक तरह के वर्कशॉप (कार्यशाला) का आयोजन व अन्य प्रचार कार्यक्रम चल रहे हैं। इस कार्यक्रम में सभी वर्ग के लोग शामिल हो रहे हैं। वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए समर्पित कार्य सेवकों की संस्था को आवश्यकता है जिनके रहने, खाने-पीने, साहित्य वितरण और प्रचार-प्रसार के लिए व्हीकल (वाहन) की व्यवस्था संस्था की तरफ से नि:शुल्क रूप से की जा रही है। इच्छुक वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार करने के लिए महिलाएं व बहनें संपर्क कर सकती हैं। यह संस्था श्री जगदीश शर्मा व उनकी पत्नी श्रीमती दुर्गा शर्मा की देख-रेख में अनामिका आर्य (शर्मा) संचालित कर रही है और प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए महिलाओं और बहनों के आवेदन भी आमंत्रित किए जा रहे हैं ताकि उन्हें विशेष वैदिक प्रशिक्षण दिया जा सके। संपर्क करें:- 9829665231

(पृष्ठ 6 का शेष)

महर्षि वेदों के जितने गम्भीर ज्ञानी थे। उतने ही प्रभु के भावुक भक्त थे। जितने श्रेष्ठ वक्ता थे, उनते ही सहृदय व्यक्ति थे। विष पिलाने वाले को भी क्षमा करते हुए अपनी उदारता के कारण उपहार दिया। कितना बड़ा उपकार। महर्षि समाज के लिए अग्रणी थे। वैदिक संस्कृति के संरक्षक थे। वे सभी विद्वानों के सहयोगी थे सभी उनके प्रति प्रीतिपूर्ण आस्था रखते थे। अत: सभी सम्प्रदायों के आचार्यों और अनुयायियों को वे अपने लगते थे।

महर्षि की वेदवाणी को सुनते सुनते भी लोगों को तृप्ति नहीं होती थी अधिकाधिक सुनने की लालसा लगी रहती थी। उनकी भाषण शैली का मनोरम प्रवाह और प्रभाव उनका अटूट देश प्रेम वेदों के प्रति अगाध आस्था, भारतीय संस्कृति के प्रतिनितान्त निष्ठा। हमारे स्वामी दयानन्द सरस्वती ने प्रत्येक पुरुष के लिए सारपूर्ण ये उद्धार प्रस्तुत किए थे। महर्षि अत्यन्त व्यापक समग्रता के केन्द्र बिन्दु थे। जिसमें एक्य भी है। सौष्ठव भी है और इस समन्वय में एक अद्वितीयता, भारतीयता की ओजस्वी उपलब्धि भी है।

1. **यत् भद्रं तत् न आसुव।** जीवन के उदात्त मूल्यों के प्रति आस्था रखो। **2. तन्मे मन: शिवसंकल्पमस्तु।** सुख, शान्ति, पवित्रता के लिए मंगल संकल्प को धारण करो। **3. धियो यो न: प्रचोदयात्।** जीवन में उदात्त, श्रद्धावान्, सुरक्षित निर्भर योग्य व्यक्ति, अपनी श्रेष्ठतम बुद्धि के अनुसार आचरण करो। निष्ठापूर्वक गायत्री जाप से इष्टदेव का सामीप्य प्राप्त होगा।

'महर्षि दयानन्द सरस्वती' मंगल दीप तो बुझ गया पर उनकी वैदिक संस्कृति के उन्नायक स्मृति ग्रन्थ अमर हैं और समस्त मानव जाति के पथ प्रदर्शक है। बस यही मान्य देव दयानन्द के 'टंकारा का आर्यत्व प्रतीक' है।

व्यक्ति के लिए उसके व्यक्तित्व का वही महत्व है, जो फूल के लिए सुगंध का है।

(पृष्ठ 2 का शेष)

अवसर पर कहे। श्री सूरी ने अपने सम्बोधन में कहा कि हम शिक्षा के क्षेत्र में सुविचारित प्रयोगों को अपनाने के लिए सदैव उत्साहित रहते हैं। इसलिए केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड ने हमारे अनेक विद्यालयों को 'स्कूल ऑफ न्यू जैनरेशन' कहा है, डी.ए.वी. स्कूल, श्रेष्ठ विहार ऐसे स्कूलों में से एक है। श्री सूरी ने अपने वक्तव्य में स्पष्ट किया कि डी.ए. वी. शिक्षा संस्थानों की सफलता का रहस्य उनके कुशल एवं प्रभावशाली प्रबंधन में निहित है।

डी.ए.वी. आंदोलन पिछले 127 वर्षों से शिक्षा के महायज्ञ में अपने प्रयासों की आहुति दे रहा है। आज डी.ए.वी. आंदोलन देश भर में 700 से अधिक शिक्षा संस्थानों का संचालन कर रहा है। इनमें विद्यालय, महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय शामिल है। कार्यक्रम के प्रारम्भ में डी. ए.वी. पब्लिक स्कूल, श्रेष्ठ विहार की प्रबंध समिति के प्रधान सुप्रसिद्ध शिक्षाविद् प्रिंसिपल श्री टी.आर. गुप्ता के अपने स्वागत भाषण में कहा कि श्री पूनम सूरी द्वारा डी.ए.वी. आंदोलन की कमान सम्भालने के बाद इसमें कई नए आयाम जुड़े हैं। शिक्षा के माध्यम से पर्यावरण की सुरक्षा एवं संरक्षण का संदेश विभिन्न स्तरों पर किया जा रहा है। नए प्रयोगों के प्रति सम्मान बढ़ा है। विभिन्न संस्थानों के शिक्षकों और विद्यार्थियों के बीच सक्रिय संवाद बढ़ा है। हमारे विद्यार्थी अच्छे अंक ही नहीं प्राप्त करें, बल्कि भविष्य के अच्छे नागरिक भी बनें, आज हमारी चिंता का प्रमुख मुद्दा है। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि जिस सभागार का उन्होंने आज लोकार्पण किया है, उससे विद्यालय में शिक्षणेत्तर गतिविधियों का बहुआयामी विकास होगा। यह विकास महात्मा आनंद स्वामी जैसे तपस्वी संतों को डी.ए.वी. आंदोलन की सच्ची श्रद्धांजलि होगा।

विद्यालय की प्रधानाचार्य श्रीमती प्रेम लता गर्ग ने अपनी रिपोर्ट में कहा कि विद्यालय ने शिक्षण एवं शिक्षणेत्तर गतिविधियों के क्षेत्र में जो नए कीर्तिमान स्थापित किए हैं, वे डी.ए.वी. आंदोलन के प्रमुख श्री पूनम सूरी जी के मार्गदर्शन का ही प्रतिफल है। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि आज श्री पूनम सूरी जी ने जिस नव - विकसित सभागार का लोकार्पण किया है, वह संत महात्मा आनंद स्वामी की स्मृति को समर्पित है क्योंकि उनका जीवन साधारणता में असाधारण का एक बड़ा उदाहरण है। हमारे विद्यार्थियों के लिए उनका जीवन एक मशाल का कार्य करेगा।

इस कार्यक्रम में डी.ए.वी. आंदोलन के पदाधिकारियों, अधिकारियों एवं दिल्ली तथा एन.सी.आर. के डी.ए.वी. विद्यालयों के प्रधानाचार्य तथा शिक्षकों ने बड़ी संख्या में भाग लिया। कार्यक्रम के अंत में विद्यालय के प्रबंधक श्री एस.सी.गुप्ता ने सभी अतिथियों के प्रति आभार व्यक्त किया।

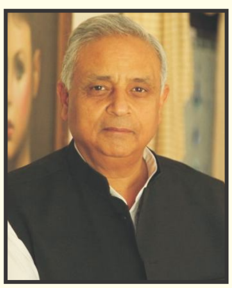

टंकारा में आयोजित होने वाले ऋषि बोधोत्सव

दिनांक 26, 27, 28, फरवरी 2014

27 फरवरी 2014 को होने वाले मुख्य कार्यक्रम के मुख्य अतिथि होंगे।

श्री पूनम सूरी जी

(प्रधान, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवं डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति)

विद्यार्थियों के गुण-दोष

विदुरजी ने विद्यार्थियों के आठ दोष गिनाये हैं। यथा

आलस्यं मदमोहौ च चापलं गोष्ठीरेव च।
स्तब्धता चाभिमानित्वं तथात्यागित्वमेव च॥
एते वा अष्ट दोषाः स्युः सदा विद्यार्थिनां मताः॥

अर्थ- आलस्य=शरीर और बुद्धि में जड़ता, मद=नशा, मोह=किसी वस्तु में फँसावट, चपलता=इधर-उधर की व्यर्थ की कथा कहना और सुनना पढ़ते-पढ़ते रूक जाना, अभिमानी और अत्यागी होना। ये आठ दोष विद्यार्थियों में होते हैं। विद्या के अभिलाषियों को इन्हें त्याग देना चाहिए।

वैदिक साहित्य में विद्या-अध्ययन करनेवालों के लिए विद्यार्थी, ब्रह्मचारी और अन्तःवासी शब्दों का प्रयोग हुआ है। ब्रह्मचारी शब्द अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इसमें अनेक अर्थों का समावेश है। ब्रह्म का अर्थ है-परमात्मा, वेद, ज्ञान और वीर्य। 'चर' का अर्थ है- विचरण, अध्ययन, उपार्जन और रक्षण। इस प्रकार परमात्मा में विचरण करनेवाला, वेद का अध्ययन करनेवाला, ज्ञान का उपार्जन करनेवाला और वीर्य का रक्षण करनेवाला ब्रह्मचारी है। विद्यार्थी का अर्थ-विद्या को चाहने वाला। अन्तःवासी का अर्थ है-आचार्य के चरणों में रहकर विद्या का उपर्जन करनेवाला।

मनुष्य अपने भाग्य का गुलाम नहीं,
अपितु मन का गुलाम होता है।

मनुष्य अपने मन को बदलकर अपनी जीवन की
बाहरी वस्तुओं को बदल सकता है।

टंकारा समाचार दिसम्बर, 2013
Delhi Postal R.No. DL (ND)-11/6037/2012-13-14
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसेंस नं० U(C) 231/2012-14
Posted at Patrika Channel, Delhi R.M.S. on 1/2-12-2013
R.N.I. No 68339/98

ऋषि बोधोत्सव का निमन्त्रण एवं आर्थिक सहायता की अपील

मान्यवर, सादर नमस्ते!

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष ऋषि बोधोत्सव का आयोजन 26, 27, 28 फरवरी 2014 (बुधवार, वीरवार, शुक्रवार) को महर्षि दयानन्द जन्मस्थली टंकारा में आयोजित किया जा रहा है। आपसे प्रार्थना है कि आप इस कार्यक्रम में परिवार एवं मित्रों सहित अधिक से अधिक संख्या में पधारने की कृपा करें।

ऋग्वेद पारायण यज्ञ : दिनांक 21 फरवरी 2014 से 27 फरवरी 2014 तक

ब्रह्मा : आचार्य रामदेव जी

भक्ति संगीत : श्री सत्यपाल पथिक (अमृतसर)/**श्री जगत वर्मा** (तलवाड़ा, पंजाब)

श्री अमर सिंह आर्य वाचस्पति (ब्यावर, राजस्थान)

सम्पूर्ण कार्यक्रम के अध्यक्ष : श्री बृज मोहन लाल मुंजाल (प्रमुख हीरो ग्रुप इण्डस्ट्रीज)

मुख्य अतिथि : श्री पूनम सूरी

(प्रधान, डी.ए.वी. कॉलेज प्रबंधकर्त्री समिति एवं आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा)

बोधोत्सव

दिनांक 27-02-2014

अध्यक्षता: श्री सुरेश चन्द अग्रवाल (प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, गुजरात)

कार्यक्रम के सम्भावित आमन्त्रित विद्वान्

स्वामी आर्येशानन्द (माउन्ट आबू), **प्रो. महावीर** (कुलपति उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय हरिद्वार), **डॉ. सोमदेव शास्त्री** (मुम्बई) **श्री कुंवरजी भाई बावलिया** (स्थानीय सांसद), **श्री बल्लभभाई कथीरिया** (अध्यक्ष, गौ सेवा सदन गुजरात), **श्री मोहन भाई कुण्डारिया** (राज्यमन्त्री, गुजरात सरकार), **श्री कान्ति भाई अमरतिया** (विधायक मोरबी), **श्री विनोद शर्मा** (यू.एस.ए.), **श्री गिरीश खोसला** (यू.एस.ए.), **श्री वाचोनिधि आर्य** (गांधीधाम) **एवं इसके अतिरिक्त देश-विदेश से अनेकों विद्वान एवं संन्यासी महानुभाव उपस्थित रहेंगे।**

दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि टंकारा में चल रहे कार्यों के लिये एवं ऋषि लंगर हेतु अधिकाधिक आर्थिक सहयोग देकर पुण्य के भागी बनें। यह दान नकद/क्रास चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर द्वारा "श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा" के नाम दिल्ली कार्यालय आर्यसमाज "अनारकली" मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-1 अथवा टंकारा, जिला राजकोट-363650 (गुजरात) के पते पर भिजवा कर पुण्यार्जन करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि धारा 80 जी के अन्तर्गत आयकर से मुक्त है।

-: निवेदक :-

श्री सत्यानन्द मुंजाल	श्रीमती शिवराजवती आर्य	रामनाथ सहगल
मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान	उपप्रधाना	मन्त्री

मुद्रक व प्रकाशक–रामनाथ सहगल द्वारा मयंक प्रिंटर्स, 2199/63, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली–5 मोबाइल: 9810580474 से छपवाकर कार्यालय महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–1 दूरभाष : 23360059, 23362110 से प्रकाशित। संपादक : अजय